रणभेरी
फिर ललकार रही

रणभेरी फिर ललकार रही

वीरेन्द्र मेहता

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
2/35 अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

शाखा
चौड़ा रास्ता, जयपुर

इस संस्करण की समस्त आय कारगिल-युद्ध के शहीदों की सहायतार्थ
प्रधानमंत्री के 'राष्ट्रीय रक्षा-कोष' में दी जायेगी।

मूल्य : 100.00

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2/35 अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002 द्वारा प्रकाशित / प्रथम संस्करण : 1999 / [illegible], नयी दिल्ली / [illegible], दिल्ली-32 में मुद्रित।

ISBN 81-214-0672-2

समर्पण

देश के उन शहीदों को
जिन्होंने मातृभूमि की रक्षा हेतु
हँसते हँसते अपने प्राणों को
न्यौछावर कर दिया

बालकवि बैरागी
संसद सदस्य (राज्यसभा)



सी-201, स्वर्ण जयंती सदन,
डॉ. बी.डी. मार्ग,
नयी दिल्ली-110001

अंतस का आषाढ़

एक कलम ईश्वर ने जिनके हाथों में दी उन बंधु का नाम माता-पिता ने रखा वीरेन्द्र और उनकी पहचान बनी श्री वीरेन्द्र मेहता के नाम से।

कार्यरत हैं वे वाणिज्य, व्यवसाय-उद्योग-उत्पादन और विपणन के क्षेत्र में किंतु सृजनरत हैं कविता कर्म में। अपनी सामान्य दिनचर्या में वे जब जब करुणा, सम्वेदना, रोष-आक्रोश या सात्विक आवेश से भर जाते हैं तो उनकी कलम चल पड़ती है। समाज के नैतिक मूल्यों पर आघात होते ही उनकी शिराएं झनझना पड़ती हैं और व्यवस्था के विद्रूप पर प्राय: असहज हो उठना उनका निसर्ग हो गया है। ऐसे दृश्यों और परिदृश्यों पर उनके 'अंतस का आषाढ़' गरज कर बरस पड़ता है।

'रणभेरी फिर ललकार रही' उनके 'अंतस के आषाढ़' की पहली मेघमाला है। इसमें बिजली और पानी दोनों हैं। बेशक आग (जिसे हम बिजली कह लें) का अंश अधिक है लेकिन यह मेघ छटा बरसी एक घटा की तरह ही। बादल बनते रहे, बिजली कौंधती रही और घमाघम छमाछम होती रही।

श्री वीरेन्द्र मेहता का यह पहला कविता संग्रह है। संग्रह के दो भाग हैं। 'रणभेरी' पहला भाग है और 'ललकार' दूसरा। दूसरे भाग में विगत वर्षों में लिखी गयी रचनाएं हैं किंतु 'रणभेरी' की रचनाएं मई 1999 से जुलाई 1999 के बीच लिखी गयी हैं। अखबार पढ़कर, टेलीविजन देखकर, रेडियो सुनकर, यहां वहां से समाचार सुनकर जैसे जैसे बादल बनते गये वैसे वैसे वीरेन्द्रजी के सम्वेदनशील मन में बिजलियां कौंधती गयीं, उत्पल वर्षा होती रही और पानी बरसता रहा। सर्जना का संसार रचाव लेता रहा। वे रचते रहे। रचयिता की भूमिका निबाहते रहे। बेचैन वे आजीवन रहेंगे। चैन से जीने का योग शायद उनकी जन्म कुंडली में ही नहीं है। मेरा तात्पर्य उनकी मानसिक बेचैनी से है। वैसे घर गृहस्थी में सब रामजी राजी हैं।

'रणभेरी फिर ललकार रही' के काव्य पक्ष पर टिप्पणी करना मेरा दाय नहीं है। यह काम पाठकों का है। मैं मात्र रचना पर बात कर रहा हूं। एक रचनाकार व्यक्त हो गया। उसने जो कुछ जैसा कुछ वह रच सकता था वह रच दिया। उसका काम सम्पन्न हो गया। आपका शुरू हो गया। रचना पाठकों के दायरे में आ गयी। अब पाठक जाने और पाठकों का ईमान जाने। ख़ैर,

सवाल यह है कि अगर 'करगिल' पर पड़ोसी की कुदृष्टि नहीं पड़ती तो वीरेन्द्रजी क्या करते? उत्तर इस पोथी के दूसरे भाग 'ललकार' से मिलता है। वे कुछ न कुछ कर ही रहे थे। कह ही रहे थे। 'करगिल' हो गया तो आपकी तरह वे भी उधर उन्मुख हो गये। वीतराग, स्थितप्रज्ञ या तटस्थ रहना उनके बस की बात नहीं थी। वे क्षण-क्षण खौलते रहे और बोलते रहे। यही हो सकता था और यही हुआ भी। और कुछ होने की संभावना थी भी नहीं। आप हम किसी अन्यथा की अपेक्षा भी नहीं करें। उन्होंने अपने चरित्र और धर्म का निर्वाह किया। वे जिस हवन कुंड में आहुति दे सकते थे उसमें उन्होंने अपनी समिधा स्वाहा कर दी। इसी सारस्वत यज्ञ की आहुति-सौरभ का नाम है 'रणभेरी फिर ललकार रही'। एक बात विशेष है। विशेष यह है कि कवि ने किसी को भी क्षमा नहीं किया है। अपनी शैली में वीरेन्द्रजी जिससे भी जो और जैसा भी कह सकते थे वह उन्होंने बेलाग कहा। कोई समझ जाये तो धन्यवाद और कोई नहीं समझे तो भी धन्यवाद। जो समझकर भी नासमझ बना रहे, भगवान उसे सद्‌बुद्धि दे।

अपनी ओर से मुझे इस पुस्तक के पृष्ठों का सदुपयोग करते हुए बहुत ही गंभीरता से एक बात रेखांकित करते हुए कहनी है कि संसार का कोई भी कवि युद्ध का समर्थक हो ही नहीं सकता। यदि वह युद्ध का समर्थक है तो फिर वह कवि है ही नहीं। केवल कवि ही नहीं स्वयं वह सिपाही भी युद्ध का समर्थक नहीं होता जो खुद एक सेना का सिपाही है और जिसके कंधे पर बंदूक है। वह अपनी खंदक में पड़ा-पड़ा, बंकर में बैठा-बैठा भी युद्ध के टलने की प्रार्थना करता है। जब भी उसे लड़ना होता है वह विवशता से ही लड़ता है और हम सभी जानते हैं कि कोई भी युद्ध कभी भी समाप्त नहीं होता है। युद्ध हमेशा स्थगित होता है। एक युद्ध दूसरे युद्ध के लिए स्थगित हो जाता है। हम इसे समाप्ति मान लेते हैं। यही हमारा भ्रम है। करगिल संघर्ष की भी यही नियति है और फिर भारत तो मूलतः युद्ध विरोधी देश है। यहां दशहरे के दिन शस्त्र की पूजा करके उसे अगले दशहरे तक के लिए सम्हाल कर रख लिया जाता है। यही कारण है कि हम सम्पूर्णतया युद्ध के लिए कभी भी तैयार नहीं मिले। युद्ध आया तो लड़ लिये। नहीं आया तो हमने प्रभु को धन्यवाद दिया। युद्ध को हमने न्यौता कभी नहीं दिया। वह अतिथि की तरह हमारे यहां आया तो हमने उसका यथाशक्ति भरपूर स्वागत सत्कार किया। अपने अतिथि की हमने देवपूजा की। 'रणभेरी फिर ललकार रही' इसी देवपूजा का

अर्चन वंदन है। शहीद बच्चों ने रक्त से अभिषेक किया। शोणित का अर्घ्य दिया। तो कलमगरों ने भी अपना धर्म निवाहा। घर आये देवता को हम निराश कैसे करते? किन्तु हम इस देवता के समर्थक नहीं हैं और भक्त तो कभी नहीं।

आइये! हम श्री वीरेन्द्र मेहता को इस बात का धन्यवाद दें कि उन्होंने अपने 'अंतस के आषाढ़' की रिमझिम को रोका नहीं। हम ईश्वर से यह भी प्रार्थना करें कि हमारे आंगन में ऐसा अतिथि-पूजन फिर कभी नहीं हो। 'ललकार' लगती रहे पर 'रणभेरी' सारे विश्व में कहीं नहीं बजे। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसी ऋचा जिस देश में अवतरित हुई हो उस देश में ऐसी रचनाओं के लिए जिम्मेदार क्षण कभी अवतरित नहीं हो।

वीरेन्द्रजी! आप ललकारते हुए अधिक अच्छे लगते हो। अपने उस रूप को सतत् रखो। सन्नद्ध रहना शौर्य की पहली शर्त है। बधाई!

महात्मा तिलक जयंती
1 अगस्त, 1999

— बालकवि बैरागी

सुरेन्द्र शर्मा
(हास्य कवि)

रोहतगी अपार्टमेन्ट, कॉटेज-4
1 रामकिशोर रोड,
सिविल लाइन्स, दिल्ली

ओज का आक्रोश

प्रिय श्री वीरेन्द्र मेहता की ओज की कवितायें पढ़ीं। कोई सोच भी नहीं सकता था— यह बही-खातों में खोये रहने वाला व्यक्ति कविता भी लिख सकता है। क्योंकि व्यापार और प्यार—बात जमती नहीं है। वाणिज्य से जुड़े व्यक्ति के लिए कविता लिखना तो दूर की बात है उसे कविता सोचने के लिए भी समय नहीं मिलता। या यूँ कहूँ, कविता पढ़ने व सुनने के लिए भी समय निकाल ले तो बहुत बड़ी बात है। 'रणभेरी फिर ललकार रही' की कवितायें लिखी नहीं गयी हैं; स्वत: प्रस्फुटित हुई हैं। सही बात है सैनिक जब सीमा पर युद्ध कर रहा होता है तो वह अकेला युद्ध नहीं करता उसके साथ युद्ध में उस देश के करोड़ों लोग भी किसी न किसी तरह से जुड़े रहते हैं। वह युद्ध किसी से धन दान करवाता है किसी से रक्त दान। कोई उस आक्रोश को, जोश को अपनी लेखनी से व्यक्त करता है। इस पुस्तक की सभी कवितायें एक विस्फोट की तरह अंतरमन से निकले उसी आक्रोश को, जोश को व्यक्त करती हैं। और जब व्यक्ति सम्पूर्ण रूप से एकाकार हो जाता है इस काव्य रस में, तो वह नहीं बंध सकता है—व्याकरण या छन्द की सीमाओं में—वह तो खोया रहता है अपनी भावना को व्यक्त करने में। पाठकों से मेरी यही विनती है, वीरेन्द्र मेहताजी की काव्य रचना में रचना-शिल्प पर न जाकर उसके भाव-पक्ष की ओर देखें कि इस व्यक्ति में देश के प्रति कितना आदर व समर्पण है।

मेरी ढ़ेरों शुभकामनायें!

(सुरेन्द्र शर्मा)

करगिल और मैं

कविता लिखना एक बात है और अपनी ही कविताओं के सम्बन्ध में लिखना एक अत्यन्त कठिन कार्य है, ऐसा मैं अनुभव कर रहा हूँ, जब अपनी कविताओं के सम्बन्ध में लिखने बैठा हूँ।

व्यावसायिक कार्यो में रत, मेरे हाथों में कब लेखनी आयी और कैसे इस लेखनी का अबाध प्रवाह बह निकला पता ही नहीं चला। बड़ा अद्‌भुत लगता है—आत्मिक सन्तोष होता है! लगता है मेरे संचित पुण्यों के फलस्वरूप माँ शारदा ने असीम-अनुकम्पा से अपना वरद्-हस्त मेरे शीश पर रख दिया और उसी आशीर्वाद का प्रसाद है—मेरी कविताएं।

इतिहास साक्षी है, हम कभी आक्रांता नहीं रहे। हम सदा शान्ति के साधक रहे हैं, किन्तु यह भी सत्य है कि हमारी मातृभूमि पर जब भी किसी ने आक्रमण का दु:साहस किया है, भारत माँ की वीर सन्तानों ने उनको मुँहतोड़ जवाब दिया है। अपनी मातृ-भूमि की आन को अक्षुण्ण रखने वाले युद्ध-रत सेनानियों को प्रेरणा देते रहे हैं—देश के कवि। पृथ्वीराज चौहान को प्रेरित किया चंदवरदाई ने, शिवाजी के शौर्य का यशोगान किया भूषण ने। देश-प्रेम एवं राष्ट्रीय चेतना के प्रेरक गीतों एवं कविताओं के रचने का अनवरत क्रम निरन्तर चलता रहा है, वह कभी नहीं थमा है, कभी थमेगा भी नहीं। 'रणभेरी फिर ललकार रही' उसी क्रम की एक कड़ी है।

गीता में कहा गया है, 'यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धुनर्धरः तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम'। हमने सदा नीति एवं न्याय की रक्षा के लिए युद्ध लड़े हैं, इसीलिए हमारी संस्कृति में युद्ध को भी धर्म-युद्ध की संज्ञा दी गयी है। युद्ध तो सतत् चलने वाली सनातन क्रिया है। युद्ध कभी-समाप्त नहीं होता, होगा भी नहीं। सृष्टि के प्रारम्भ से देवासुर संग्राम चला था। आज मानव मात्र के भीतर देवासुर संग्राम चल रहा है। यह संग्राम शाश्वत है तथा न्याय, नीति एवं धर्म के बल पर देव असुरों पर विजयी होते हैं। इसी कारण अनीति पर नीति की एवं अन्याय पर

न्याय को सदा विजय होती है।

जब यों लगता है कि जिस स्वतंत्र भारत की कल्पना हमारे स्वतंत्रता-संग्राम के सैनिकों ने की थी जिसमें राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक स्वतंत्रता हो, सद्भावना और मैत्री का वातावरण हो, भाईचारे की भावना हो, सर्वत्र प्रेम की धारा प्रवाहित होती हो वहीं जब पग-पग पर विसंगतियां हों, विद्रूपताएं हों तो अन्तर का आहत होना स्वाभाविक ही होता है। यह आघात और गहरा हो जाता है जब हमारी पावन मातृभूमि पर कोई कुत्सित-ललचायी दृष्टि से देखने का दुःसाहस करे, हमारी अस्मिता को ललकारे, हमारे शौर्य और पराक्रम को चुनौती दे, हमारे शान्ति-प्रयासों, प्रस्तावों को कायरता समझकर हर बार पराजित होकर भी कभी खुले तथा कभी छद्म रूप में हमारी सीमाओं पर आक्रमण करे। ऐसे समय में कलम अंगार उगलती है, रणभेरी ललकार उठती है—

"...रिपु रक्त से खेलेंगे होली सीने पर झेलेंगे गोली
अब मातृभूमि की जय बोली, लो चली दीवानों की टोली...
नहीं चिन्ता चाहे घाव मिले, या मौत गले का हार बने
जिसने ललकारा है हमको, बस उसे मृत्यु उपहार मिले।"

करगिल में मई 1999 से जुलाई 1999 के मध्य लगभग दो महीने चले युद्ध की त्रासदी ने कई माँओं की गोदें उजाड़ दीं, कई सुहागिनों की मांगों का सिंदूर पोंछ दिया, कितने ही अबोध बच्चों को अनाथ बना दिया और न जाने कितने बूढ़े बापों की आंखों के सपने जला दिये। एक ऐसा युद्ध जो कोटि-कोटि जनों को अनकहे, अनचाहे घाव दे गया, आहत कर गया। मैंने यह सब देखा, सुना, पढ़ा। मैंने टी.वी. पर हमारे रण-बांकुरों को दुश्मन के छक्के छुड़ाते हुए देखा है। देश के वीर सिपाहियों को दुर्गम बर्फीली पहाड़ियों पर मोर्चा जमाते व दुश्मन से लोहा लेते देखा है। मैं देखता रहा हूं आग उगलती बोफोर्स तोपों को और सुनता रहा हूं रॉकेटों के धमाके और मशीनगनों की गड़गड़ाहट। मैंने टी.वी. पर सैकड़ों अमर शहीदों की धू-धू कर जलती चिताओं की झंझार देखी है और देखी है उन चिताओं की राख जो देश के कोने-कोने में बसे सैकड़ों गांवों की धरोहर बन गयी है। मैंने टी.वी. एवं समाचार-पत्रों में कैप्टन जयश्री गुप्ता जैसी अनेक वीरांगनाओं के यौवनित वसन्त को वैधव्य के पतझड़ में परिवर्तित होते देखा है और देखा है शहीदों के अबोध बच्चों को अपने वीर पिता की चिता को मुखाग्नि देते हुए। कैप्टन विजयन्त थापर जैसे सैकड़ों शहीदों के माता-पिताओं के अपने शहीद लाड़लों की याद में अश्रुपूरित नयन, गौरवान्वित चेहरे और तने हुए सीने मैंने देखे हैं। मैंने लाखों देश-भक्तों की भीगी पलकें देखी हैं और सुना है उन कंठों का उन्मुक्त जय-घोष।

बर्फीली पहाड़ियों में जहां ठंड से हड्डियाँ ठिठुर-सिकुड़ जाती हों, ऑक्सीजन

के अभाव में सांस लेना दूभर हो, जहाँ नियंत्रण रेखा लक्ष्मण रेखा बन गयी हो, चारों तरफ सीधी चट्टानें, बर्फ ही बर्फ, प्रकृति एवं युद्ध की ऐसी विषम परिस्थितियों से जूझते वीर जवानों के अप्रतिम शौर्य को, उनके साहस को, उनके बुलंद इरादों को मेरे अन्तर्मन ने बहुत करीब से महसूस किया। एक-एक घटना मेरे अन्तर को बेधती रही, खून खौलता रहा, विचार कौंधते रहे, भावनाएं उबलती रहीं, लेखनी चलती रही, कविताएं रचती गयीं। इसीलिए कभी उनमें आक्रोश है तो कभी विक्षोभ। कभी उनमें संकल्प है तो कभी विद्रोह। कभी उनमें वेदना है तो कभी संवेदना। कभी उनमें क्रांति की अनुगूँज है तो कभी चेतना के स्वर। इनमें शौर्य की रणभेरी भी है और चुनौती भरी ललकार भी। तभी तो वतन पर मर मिटने को तत्पर जवानों की ललकार गुंजायमान हो उठती है—

"देखना रँग देंगे पर्वत शत्रुओं के खून से
लाल हो सतलज का पानी पूर्ण होगा तब हवन।
ऐ वतन, ऐ वतन ज़िन्दा रहे मेरा वतन...।"

'रणभेरी फिर ललकार रही' को मैंने दो खण्डों में प्रस्तुत किया है। प्रथम खण्ड 'रणभेरी' एवं द्वितीय खण्ड 'ललकार'। वैसे एक ही खण्ड में सभी रचनाएं आ सकती थीं क्योंकि दोनों खण्ड एक-दूसरे के पूरक हैं। किन्तु जब करगिल में रणभेरी बजी और नित्य-प्रति दिन मेरी लेखनी से इतनी रचनाओं का सृजन हो गया तो मुझे लगा कि इन दो महीनों की त्रासदी को एक अलग खण्ड में प्रस्तुत किया जाये तो बेहतर होगा ताकि आने वाले समय में यह सनद रहे कि करगिल-प्रकरण ने एक संवेदनशील एवं भावुक हृदय को दो माह के युद्ध में कब-कब, कैसे-कैसे कितना आहत किया।

करगिल में मुजाहिदों के छद्म-वेश में पाकिस्तानी सैनिक चोरी-चुपके सेंध लगाकर हमारे घर में घुस बैठे। 6 मई, 1999 को कुछ गड़रियों ने हमारी सेना को इसकी जानकारी दी और 8 मई, 1999 को हमारी सेना ने पूरी मुस्तैदी के साथ 'ऑपरेशन विजय' प्रारम्भ कर दिया। सामने कड़ी चुनौती थी। शत्रु दुर्गम पहाड़ी चोटियों के ऊपर घात लगाए बैठा था। वहाँ पहुँच पाना कठिन था। परिस्थितियां अत्यन्त विकट, विषम एवं विपरीत थीं किन्तु हमारे वीर जवानों के हौसले बुलंद थे। सिर पर कफ़न बांधे वे शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं। उनका खून खौलता है और बर्फ पिघल जाती है :

"क़तरा-क़तरा ख़ून का बह गया वतन के वास्ते
मिट गया, कुछ ग़म नहीं, जन्मा वतन के वास्ते
पिघले हैं बर्फीले पर्वत, धार जब लहू की बही
मैं हिमालय सा अडिग था, शत्रु सेना कह रही..."

हमारे रण-बांकुरों ने जिस शौर्य, साहस एवं रण-कौशल के साथ-साथ जिस अनुशासन एवं मर्यादा का परिचय दिया है उसकी मिसाल विश्व भर के युद्ध इतिहास में कभी नहीं मिलेगी। इसके विपरीत पाकिस्तानी घुसपैठियों के रूप में छुपे सैनिकों के क्रूर, बर्बर, पाशविक एवं गैर-ज़िम्मेदार और भड़काने वाले व्यवहार की सारे विश्व ने भर्त्सना की। क्या मातृभूमि पर वीरगति को प्राप्त लेफ्टिनेंट सौरभ कालिया एवं उनके अन्य साथियों के शवों को क्षत-विक्षत करके शत्रु ने अपनी कायरता का परिचय नहीं दिया :

"हम कैसे भूलें इकहत्तर को, नब्बे हज़ार युद्ध बन्दी थे
हमने उनका सम्मान किया, जैसे वो हमारे बन्धु थे
पर आज हमारे वीरों के शव क्षत-विक्षत वो करते हैं
कैसे हम अब खामोश रहें, ये ज़ख्म सीने में दुखते हैं।"

और इसीलिए हम व्यथित होकर हुंकार उठते हैं :

"अब नहीं बनना हमें शान्ति दूत, पूजा चण्डी की करनी है
इस बार भी जंग उसने छेड़ी, अब सज़ा उसे भुगतनी है।"

शान्ति के पुजारी मां रण-चण्डी का आह्वान करते हैं :

"काट शत्रु के शीश हे माता, मुण्ड-माल धारण कर लो
इतना रक्त बहे शत्रु का, तुम अपना खप्पर भर लो।"

मातृ-भूमि की रक्षा के लिए अपना खून पानी की तरह बहाने को सदा तत्पर हमारा वीर जवान हर युद्ध में जीतने के बाद हुई हमारी भूलों के प्रति आखिर कह उठता है :

"देना होगा वचन आज पिछली भूलें ना दोहराओगे,
जीते हुए इलाके वापस भेंट नहीं कर आओगे।"

आतंकवाद और बार-बार होने वाली घुसपैठ को जड़ से मिटाने का संकल्प लेते हुए वह कहता है :

"ना बांधो अब और हमें, लक्ष्मण-रेखा में राम
जाकर सीमा पार हमें, करने दो काम तमाम... ।"

आखिर कब तक यह लुका-छिपी का खेल चलता रहेगा? देश के बंटवारे से उठी आग की लपटें कब तक हमें झुलसाती रहेंगी? सन् 1948 में कबायलियों के साथ पाकिस्तानी सेना का अतिक्रमण फिर 1965 में एवं 1971 में किये गये सीधे आक्रमण और अब करगिल में छिड़ा अघोपित युद्ध। बार-बार पराजित होकर भी

पाकिस्तान अपनी हरकतों से बाज नहीं आता। आ भी नहीं सकता। जिसका जन्म ही नफरत के आधार पर हुआ हो उससे अमन की अपेक्षा की भी नहीं जा कसती।

"ज़िद्दी जिन्ना की ज़िद के आगे
जब झुका था एक महात्मा
बंटवारे की तब नींव 'पड़ी
नापाक पाक था जन्मा...
ये गोरी के वंशज हैं—
ये अमन, शांति क्या जानें
ये तो वहशी हमलावर हैं
बस युद्ध की भाषा ही पहचानें।"

पाकिस्तान द्वारा बार-बार भड़काई जाने वाली युद्ध की विभीषिका से सम्पूर्ण भारत आहत हुआ है। देश के कोने-कोने में रोष और आक्रोश की आग फैली हुई है। सभी एक स्वर से मांग कर रहे हैं कि पाकिस्तान को पूर्ण रूप से पराजित कर इस विवाद को सदा-सदा के लिए खत्म कर दिया जाय। विभाजन की भूल का प्रायश्चित अब करना ही होगा :

"...फिर से उभरे मानचित्र पर ऐसे भारत का नक्शा
विभाजन की भूल भूलें सब, ऐसा बने नया नक्शा...
अब लाहौर कराची हो या चाहे रावल पिण्डी हो
लहराये सब जगह तिरंगा, सभी जगह अब हिन्दी हो।"

बार-बार युद्ध के घाव अब और नहीं सहे जाते। जरा सोचिए उस बूढ़े बाप की बेबसी, जिसका एक मात्र पुत्र करगिल की बर्फीली चोटियों पर युद्धरत है और उसकी कोई खबर नहीं :

"बेटा गया सीमा पर लड़ने
हो गया एक महीना
पूछ रहा है बूढ़े बापू की
आँख में पलता सपना—

मेरा बेटा करगिल से
वापस आयेगा ना।..."

इस शरीर की एक-एक शिरा झनझना उठती है जब देखता हूं कि गांव की नवोढ़ा के हाथों की मेहंदी उतरी भी ना थी कि उसे अपने पति के शहीद होने की खबर मिलती है :

"हाथों की मेहंदी अभी, सूखी भी ना थी कि पुंछ गई
मेरे गाँव की दीवाली, जलने से पहले बुझ गई।
टूट कर चूड़ी चुभी, कंगन भी चकना-चूर था
माँग सूनी हो गई, कल तक सजा सिन्दूर था।"

जरा कल्पना कीजिए उस वीरांगना की जिसकी डोली मात्र कुछ माहपूर्व ही उसके शहीद पति के घर के आंगन में उतरी थी और आज सेना का ट्रक उसी आंगन में उसकी अर्थी तिरंगे में लपेटे लिए चला आ रहा है :

"डोली में बिठाकर लाये थे
कैसे अर्थी स्वीकार करूँ,
अब तुम्हीं बताओ हे स्वामी
मैं कैसे स्वागत-द्वार बनूँ?"

लेकिन इस वीर क्षत्राणी का संकल्प देखिए :

"पर आज पुनः प्रण करती हूँ
क्षत्राणी धर्म निभाऊँगी
आने वाली सन्तान को भी
मैं तुझ सा वीर बनाऊँगी।

जैसे ही धरा पर आएगा
उसे तेरी कथा सुनाऊँगी
बन्दूक थमाकर हाथों में
शत्रु का शीश मँगवाऊँगी।"

धन्य है इस देश की वीर नारी और धन्य है उसकी वीर सन्तान जो बाल्यावस्था से ही अपनी मां से आग्रह कर रहा है :

"ऐ माता बन्दूक दिला दे, मैं सीमा पर जाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का मैं शीश काट कर लाऊँगा..."

धन्य है केप्टन जयश्री जो अपने शहीद पति मेजर विवेक गुप्ता को सम्पूर्ण सैनिक यूनिफार्म में उसे 'सेल्यूट' करती हैं :

"...आँसुओं को थाम कर
अंतिम विदा मैं ले रही
फिर मिलें अगले जनम
वादा मैं तुमसे ले रही।"

17 जून, 1999 को समाचार-पत्रों में छपा केप्टन जयश्री का यह अमर-अविस्मरणीय-चित्र एक ऐतिहासिक धरोहर के रूप में संजोकर रखने योग्य है ताकि आने वाली पीढ़ियां ऐसी वीरांगना से प्रेरणा ले सकें। यही सोचकर मैंने इस चित्र को अपनी कृति के आवरण-पृष्ठ पर सम्मान दिया है।

धन्य है इस देश का हर एक वीर जवान जिसने अपनी मातृभूमि की आन की खातिर हंसते-हंसते अपनी जान लुटा दी और अपने प्रियजनों एवं देशवासियों को संदेश दिया :

"ना कोई क्रन्दन विलाप हो
ना गीली करना आँखें
मातृभूमि की रक्षा करते
अर्पित की अपनी साँसें...

कभी-कभी आता है यारों
जान लुटाने का मौसम
हमने करदी जान न्यौछावर
ना करना कोई मातम।"

धन्य है उन दुर्गम बर्फीली पहाड़ियों पर डटे देश के वीर सिपाहियों के बुलंद हौसले :

"हे सूर्य तुझे है शपथ आज, तुम अस्त नहीं होओगे
जब तक बैरी का अन्त ना हो, तुम रात नहीं सोओगे...
तुम विचरो नभ में हे विशाल, हो पैरों में शत्रु की कपाल
हो जाये रक्त से गगन लाल, तुम राह नहीं बदलोगे..."

धन्य है उनका अखंड विश्वास :

"किरणों में तेरी ज्योति प्रखर, जलना तुझको अब आठों प्रहर
अब युद्ध ठना अँधियारे से, हो विजयी तुम हे अजर अमर।"

और धन्य है ऐसे वीर जवानों के साथ-साथ इस देश की माताओं को जिनकी कोख ने ऐसे सिंह-शावकों को जन्म दिया :

"ऐ वीर-प्रसूता जननी तुझे, हम कोटि-कोटि नमन करें,
जो जन्मे तेरी कोख से माँ, उन वीरों को हम नमन करें।"

ऐसे वीर और ऐसी वीरांगनाएं, ऐसे वीर-सुत और ऐसी वीर माताएं सारे विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं हो सकतीं; केवल इस पुण्य-भूमि, वीर-भूमि भारत वर्ष में ही हो सकती हैं।

रणभेरी की एक-एक स्वर-लहरी इतनी प्रबल है कि उनका वर्णन करते लेखनी थकती ही नहीं, थमती ही नहीं। खैर! अंततः एक बार फिर युद्ध के मोर्चे पर एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी जगह पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी।

लेकिन युद्ध समाप्ति की घोषणा के उपरांत भी सीमा पर तोपों के धमाके व मशीनगनों की गर्जना अभी भी पूरी तरह शांत नहीं हुई है। आतंकवादी गतिविधियां अभी भी जारी हैं। 'रणभेरी' हमें यही संदेश दे रही है :

"देखो आँख झपके नहीं
और खून टपके नहीं
वादी की वीरानियाँ
यह सन्देश दे रहीं—
जागते रहो, जागते रहो"

इस प्रकार इस कृति के प्रथम खण्ड का आधार एवं केंद्र बिंदु लगभग दो माह चले करगिल-युद्ध एवं इस युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले योद्धा ही रहे। कृति के द्वितीय खण्ड में देश के स्वाधीनता-संग्राम में हुए शहीदों के स्वप्नों के खंड-विखंडित होने की वेदना, देश के विभाजन की पीड़ा, निरंतर गिरते राजनीतिक, सामाजिक-नैतिक-मूल्यों से जनित रोष एवं चारों ओर व्याप्त भ्रष्टाचार, अनाचार एवं कुशासन के प्रति आक्रोश 'ललकार' में समाहित है। देश के विभाजन की भूल ने अब विकराल रूप धारण कर लिया है, इसकी पीड़ा असह्य है :

"मेरा वश चले तो मैं यह इतिहास बदल दूँ
आज़ादी की भूलों का अहसास आज मैं कर लूँ
विभाजन से पूर्व जो नक़्शा था वो आज मैं रँग दूँ
ठंडे पड़ते सूरज में, फिर से आग मैं भर दूँ..."

स्वाधीनता-संग्राम के सेनानियों ने जिस देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की क़ुर्बानी दे दी आज उसी देश में :

"भ्रष्ट हो गया देश का नेता
देश की अब किसको है चिन्ता
भ्रष्टाचार में मर-मर कर जीते
भ्रष्ट चरित्र, भ्रष्ट आचरण...
कैसे याद करें जन गण मन
कैसे याद करें?"

हमने स्वतंत्रता-दिवस की स्वर्ण-जयंती तो मना ली, किन्तु क्या हमारे

स्वतंत्रता-सेनानियों ने ऐसे ही स्वतंत्र भारत की कल्पना की थी?

"...सन्तरी बन गये सभी, जो थे लुटेरे घात में
छल-कपट धोखा-धड़ी, इनकी हर एक बात में।

भ्रष्ट फसलें उग रहीं, अब आज हर एक खेत में
देश-भक्ति दब गई, कुछ ख़ाक में कुछ रेत में।"

निरंतर गिरते हुए मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में यह संकल्प लेना ही होगा :

"...सड़ चुकी है जो व्यवस्था
भ्रष्ट हो चुका जो प्रशासन
वार उन पर करना ही होगा
जो हैं रावण या दुःशासन।"

साथ ही परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना भी करनी होगी :

"हे परमेश्वर मेरे भारत को फिर से आज यह वर दो
तन जाने दो फिर से भृकुटि, उन्नत शीश कसी हो मुट्ठी
जमने लगा जो रक्त शिरा में उसे उष्ण फिर कर दो..."

यही है समय की पुकार एवं ललकार!

एक बात का मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहूंगा। मैं अपने आपको न तो प्रतिष्ठित कवि मानता हूं और न ही साहित्यकार! मेरे अन्तर्मन में जब भी भावों का ज्वार प्रबल हुआ, मस्तिष्क में जब भी विचारों की बिजलियां कौंधी मैंने उन्हें सहज रूप में, आम बोल-चाल की भाषा में अभिव्यक्त कर दिया; इसलिए हो सकता है छन्द-शास्त्र, तुकांत, व्याकरण आदि की दृष्टि से कुछ कमियां-खामियां इन रचनाओं में रह गयी हों। मेरा निवेदन है कि उन कमियों को महत्त्व न देते हुए उनमें अभिव्यक्त भावों-उद्‌गारों को महत्त्व दिया जाये।

मैं उन सभी महानुभावों का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने मुझे इस कृति को प्रकाशित करने की प्रेरणा दी, प्रोत्साहित किया। विशेषतः सुप्रसिद्ध साहित्यकार, कवि एवं शिक्षाविद् डॉ. जबरनाथजी पुरोहित का। वस्तुतः डॉ. पुरोहितजी ही वह पवन हैं जिन्होंने मेरे अंतस में दबी काव्य की चिंगारी को जगाकर अंगार बनाया जिससे कि मेरी कविताएं जन-मानस तक पहुंच सकें। मैं, माँ शारदा के अनन्य साधक, राष्ट्र के सुवख्यिात कवि एवं चिंतक, राज्य-सभा के सांसद श्री बालकवि बैरागीजी, सुप्रसिद्ध विधिवेत्ता, संविधान-विशेषज्ञ, ग्रेट ब्रिटेन में भारत के पूर्व उच्चायुक्त एवं राज्य-सभा सांसद डॉ. लक्ष्मी मल्ल साहब सिंघवी

एवं सुप्रसिद्ध हास्य कवि भाई सुरेन्द्र शर्माजी का भी हार्दिक आभारी हूं जिन्होंने मेरी रचनाओं को कसौटी पर परखने का दायित्व सहर्ष निभाया। मैं इस पुस्तक में प्रकाशित संग्रहणीय चित्रों को उपलब्ध कराने हेतु हिंदुस्तान टाइम्स के सेक्रेट्री श्री वीरेन्द्र कुमारजी चौरड़िया एवं चीफ फोटोग्राफर श्री अरुण जैटली को भी हार्दिक धन्यवाद देता हूं। नेशनल पब्लिशिंग हाउस के श्री सुरेन्द्र मलिकजी विशेष बधाई एवं धन्यवाद के पात्र हैं जिन्होंने इतने अल्प समय में इन रचनाओं के प्रकाशन का दायित्व लेकर न केवल अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है अपितु करगिल में हुए शहीदों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भी अर्पित की है।

यह कृति प्रणाम है मातृभूमि को, मातृभूमि की रक्षा के लिए तन-मन-जीवन, अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले सीमा के प्रहरी सैनिकों को, भारत के वीर सपूतों को जो हमारे कल के लिए अपने आज का बलिदान कर रहे हैं।

आपका स्नेह, समर्थन इस कृति को मिलेगा, इसी विश्वास व शुभकामनाओं सहित—

वीरेन्द्र मेहता

(वीरेन्द्र मेहता)

एस-247, ग्रेटर कैलाश, भाग-2
नयी दिल्ली-110048.
स्वाधीनता दिवस
15 अगस्त, 1999

अनुक्रम

प्रथम खण्ड : रणभेरी

द्वितीय खण्ड : ललकार

रणभेरी

रणभेरी फिर ललकार रही

रणभेरी फिर ललकार रही
शस्त्रों की फिर झंकार चली
शपथ उठाते हैं माता
वीरों ने फिर हुँकार भरी!

रणभेरी फिर ललकार रही
रणभेरी फिर ललकार रही

रिपु-रक्त से खेलेंगे होली
सीने पर झेलेंगे गोली
अब मातृभूमि की जय बोलो
लो चली दीवानों की टोली!

रणभेरी फिर ललकार रही
रणभेरी फिर ललकार रही

ले हाथों में हथियार चले
कदमों में साहस साथ चले
अब सीने में अंगार जले
हर राह में जय-जयकार मिले!

रणभेरी फिर ललकार रही
रणभेरी फिर ललकार रही

चट्टान हो तुम विश्वास धरो
तुम शत्रु का संहार करो
बन वज्र-सा प्रखर प्रहार करो
ऐसा शत्रु पर वार करो!

रणभेरी फिर ललकार रही
रणभेरी फिर ललकार रही

बन आग शत्रु पर तुम बरसे
शत्रु जीवन को अब तरसे
शत्रु भागे अपने घर से
मुड़कर ना देखे अब डर से!

रणभेरी फिर ललकार रही
रणभेरी फिर ललकार रही

अब युद्ध प्रबल घमासान चले
हो तांडव ऐसा विश्व हिले
अविजित हो तुम सब मान चले
अब प्रलय-चिता में शत्रु जले!

रणभेरी फिर ललकार रही
रणभेरी फिर ललकार रही

नहीं चिन्ता चाहे घाव मिले
या मौत गले का हार बने
जिसने ललकारा है हमको
बस उसे मृत्यु उपहार मिले!

रणभेरी फिर ललकार रही
रणभेरी फिर ललकार रही



ज़िन्दा रहे मेरा वतन

ऐ वतन ऐ वतन, ज़िन्दा रहे मेरा वतन
है बड़ा सौभाग्य मेरा, जन्मा वतन के वास्ते
एक नहीं हैं लाखों क़ुरबां, जानें वतन के वास्ते!
ऐ वतन, ऐ वतन, ज़िन्दा रहे मेरा वतन !

शत्रु फिर ललकारता, छल कपट के दंभ पर
काट उसका शीश, दूंगा भेंट तुझको ऐ वतन!
ऐ वतन, ऐ वतन, ज़िन्दा रहे मेरा वतन !

शत्रु ना बच पायेगा, वार न सह पायेगा
जान के लाले पड़ेंगे, देता हूँ तुझको वचन!
ऐ वतन, ऐ वतन, ज़िन्दा रहे मेरा वतन !

चाल जिसकी चोर-सी, और नियत भी है बुरी
फौलादी अपने इरादे, खायेगा मुँह की यवन!
ऐ वतन, ऐ वतन, ज़िन्दा रहे मेरा वतन!

कायरों की भाँति जिसने, वार चुपके से किया
अब सज़ा देनी है इसको, टुकड़े-टुकड़े हो बदन!
ऐ वतन, ऐ वतन, ज़िन्दा रहे मेरा वतन!

देखना रंग देंगे पर्वत, शत्रुओं के खून से
लाल हो सतलज का पानी, पूर्ण होगा तब हवन!
ऐ वतन, ऐ वतन, जिन्दा रहे मेरा वतन!

क़ब्र खोदेंगे यहीं, कर देंगे शत्रु को दफ़न
फिर तिरंगा लहराएगा शान से ऊँचे गगन!
ऐ वतन, ऐ वतन, ज़िन्दा रहे मेरा वतन!




सौजन्य : हिन्दुस्तान टाइम्स

जन्मा वतन के वास्ते

कतरा-कतरा खून का, बह गया वतन के वास्ते
मिट गया कुछ ग़म नहीं, जन्मा वतन के वास्ते।

पिघले हैं बर्फीले पर्वत, धार जब लहू की बही
मैं हिमालय-सा अडिग था, शत्रु सेना कह रही।

शान है कश्मीर मेरा, शान है मेरा वतन
शत्रु का संहार हो, आबाद रहे मेरा चमन।

जंग हो घमासान ऐसी, शीश शत्रु का झुके
अन्तिम निर्णय इस बार हो, मध्य में ना युद्ध रुके।

लपटों में लिपटा हूँ लेटा, लाल माता का यहाँ
मातृभूमि के काम आया, ऐसी मृत्यु है कहाँ।

है शहीदों का यह मेला, अब यहाँ नहीं शोक हो
भावना भले दिल में मचले, अश्रुओं पर रोक हो।

लो शहादत का यह मौसम, फिर नया रंग ला रहा
करगिल की चोटी पर, फिर तिरंगा लहरा रहा।

हूँ नहीं मैं आज लेकिन, यह धरा आज़ाद है
मेरे जाने से है जन्मा, जन-जन में नव-विश्वास है।

मिट गया कुछ ग़म नहीं, जन्मा वतन के वास्ते
कतरा-कतरा खून का, बह गया वतन के वास्ते।



मरना वतन के वास्ते

रह-रहकर दिल में टीस उठी
अन्तर में भारी वेदना
शब्द अभिव्यक्ति भूल गये
मूक हुई संवेदना!

चित्र लिखित से हैं सभी
जड़ हुई है चेतना
शून्य संज्ञा हो गयी
कैसे सहें यह वेदना!

दे रहे अन्तिम विदा
सब ठगे से रह गये
माँ याद कर वे शब्द तेरे
घाव सारे सह लिये!

हैं सजल से नेत्र भी
कंठ भी रुंधने लगे
अलविदा हे वीर सुत
अब सभी कहने लगे!

कर दिया तुमने न्यौछावर
तन-मन वतन के वास्ते
दे गये सन्देश यह
मरना वतन के वास्ते!



एक ऐसा संग्राम छिड़े

देश- प्रेम की वीणा के
तारों की नव-झंकार छिड़े,
जन-जन करे भारत माँ की जय
घर-घर में नव-राग छिड़े।

देश-प्रेम की वीणा के...

शत्रु भय से थर्राएँ
एक ऐसा संग्राम छिड़े,
ना जाएँ तलवार म्यान में
जब तक ना हमें न्याय मिले।

देश-प्रेम की वीणा के...

नहीं माँगनी भीख किसी से
ना औरों के हार मिलें,
विश्व-वन्द्य रहा है भारत
पुनः वही सम्मान मिले।

देश-प्रेम की वीणा के...

राष्ट्र धुन की जगह बजें अब
नयी क्रांति के गाने,
चाहता हूँ इस देश के बेटे
पहने फिर केसरिया बाने।

देश-प्रेम की वीणा के...

रखकर प्राण हथेली पर
पी जाएँ रण की हाला,
माँगता हूँ वहनों से अपनी
थोड़ी जौहर की ज्वाला।

देश-प्रेम की वीणा के
तारों की नव-झंकार छिड़े,
जन-जन करे भारत माँ की जय
घर-घर में नव-राग छिड़े।



दिशा-दिशा में गूँज यही

हे वीर जवान, तेरी जय हो
हे मातृभूमि, तेरी जय हो
है दिशा-दिशा में गूँज यही
जय हो, जय हो, तेरी जय हो!

लो आहत शत्रु भाग रहे
भिक्षा प्राणों की मांग रहे
दुश्मन बचकर ना जा पाये
हर कंठ यही ललकार रहे!

अब रहे तुम्हारा ध्येय यही
दुश्मन ना फिर से वार करे
चाहे जैसा बलिदान करें
चाहे प्राणों का त्याग करें!

उर में नव उत्साह भरे
आगे-ही-आगे बढ़ते रहे
सारे मोर्चे फतह करें
एक बार तिरंगा फिर फहरे!

सब मिलकर तेरी जय बोलें
जय-जय जय-जय जय बोलें
हे वीर जवान, तेरी जय हो
जय हो, जय हो, तेरी जय हो!



हिन्दुस्तान हमारा है

एक-एक बूँद जो बहा लहू का
हम पर कर्ज़ तुम्हारा है
हम भारत के शूरवीर हैं
हिन्दुस्तान हमारा है।

हिन्दुस्तान हमारा है...

जननी जन्म-भूमि पावन है
चप्पा-चप्पा हमारा है
देखो दुश्मन बच ना पाये
हिन्दुस्तान हमारा है।

हिन्दुस्तान हमारा है...

हे शहीद हम वचन हैं देते
शत्रु ना जिन्दा जायेगा
घुसपैठी अब नहीं चलेगी
हिन्दुस्तान हमारा है।

हिन्दुस्तान हमारा है...

हो द्रास, बटालिक या करगिल
बदलेंगे युद्ध की हम तस्वीर
सारा कश्मीर हमारा है
हिन्दुस्तान हमारा है।

हिन्दुस्तान हमारा है...

हम इतिहास बदल डालेंगे
बन्दूकों से लिख दें तकदीर
बस यही हमारा नारा है
हिन्दुस्तान हमारा है।

हिन्दुस्तान हमारा है...



शत्रु बचकर जा ना पाये

शत्रु बचकर जा ना पाये
देना है तुमको वचन
यह चुनौती दे रही है
सूर्य की पहली किरण।

शत्रु बचकर जा ना पाये...

और प्रतीक्षा हो नहीं
सन्देश देता है पवन
शत्रु घुटने टेक देगा
बहना प्रलय की आंधी बन।

शत्रु बचकर जा ना पाये...

आग उगलें तोपें तुम्हारी
अंगार में दुश्मन घिरे
भस्म कर दो शोले बनकर
कह रही जलती अगन।

शत्रु बचकर जा ना पाये...

शीश उन्नत ही रहेगा
झुक कभी नहीं पाएगा
है हिमालय शान मेरी
चूमता इसको गगन।

शत्रु बचकर जा ना पाये...

अपनी माटी मलय-पावन
ना पड़े पापी चरण
वीर सेना चल पड़ी
केसरिया बाना पहन।

शत्रु बचकर जा ना पाए....

यह धरा माता हमारी
पले गोद में इसकी हैं हम
ऋण चुकाने का समय अब
जान से प्यारा वतन।

शत्रु बचकर जा ना पाये...

दुर्धर्ष अब संघर्ष हो
विजयी हो संग्राम में
लाज राखी की लुटे ना
भाई से कहती बहन।

शत्रु बचकर जा ना पाये...

जान हथेली पर लिये
रण-बांकुरे चलने लगे
प्राणों की चिन्ता किसे
जब सिर पर बांधा है कफन।

शत्रु बच कर जा ना पाये...



कर दूँ अपना शीश न्यौछावर

झुक ना पाये शीश तुम्हारा
माता किसी के चरणों में,
कर दूँ अपना शीश न्यौछावर
माता तेरे चरणों में!

नहीं बेड़ियाँ पड़ने दूँगा
माता तेरे पाँवों में,
शीश शत्रु के बने कन्दुकी
माता तेरे चरणों में!

हे माता मैं पला-बढ़ा हूँ
तेरी लोरी की छांवों में,
शौर्य गीत सुना दे माता
गली-गली और गाँवों में!

कोटि-कोटि जन बसते माता
तेरे तीव्र प्रवाहों में,
करना है रिपु का मर्दन
माता तीक्ष्ण प्रहारों में!

विजय माल धारण हो माता
वीर चले जिन राहों में,
दे आशीष हमें हे माता
तू है एक हज़ारों में!



हे माता ऐसा वर दो

काट शत्रु के शीश हे माता
मुण्ड-माल धारण कर लो,
इतना रक्त बहे शत्रु का
तुम अपना खप्पर भर लो!

जय हो तेरी माता अम्बे
जय जय जय हो हे काली,
जय हो तेरी मात भवानी
वीरों की करना रखवाली!

घर-घर में बजे बिगुल समर का
माते! कुछ ऐसा कर दो,
पग-पग पर हो विजय हमारी
वीर जवानों की जय हो!

वाणी में अब हो सिंह-नाद
तन में तुम बिजली भर दो,
बढ़ते कदम ना रुकने पाये
हे माता ऐसा वर दो!

हर जवान दस-दस पर भारी
शत्रु में यह भय भर दो,
वीर हिन्द के कभी झुके ना
हे माता ऐसा वर दो!



नहीं चाहते जंग

अब युद्ध हुआ विकराल बहुत
वरदान अमरत्व का तुम दे दो,
हो विजयी माँ सन्तान तेरी
हर वार हमें यह ही वर दो!

एक-एक कर हर चौकी पर
विजय-पताका फहरा दी
दावं पे अपनी जान लगा कर
अपनी भूमि वापस ली!

शस्य श्यामला धरती का
अतिक्रमण नहीं होने देंगे,
गर किया किसी ने दुस्साहस
रक्त की धार बहा देंगे!

रण-बांकुरे गरज के निकले
सवा लाख पर हैं भारी,
बनकर गाज गिरे शत्रु पर
हाहाकार मचा भारी!

नहीं चाहते जंग, सत्य है
लेकिन ना कायर समझो
जिसने थोपी जंग हमेशा
उसे समर्पण करने दो!



जीना हो तो शूरवीर सा

चुपके-चुपके सेंध लगाता
चोरों सा व्यवहार करे,
वह कायर है, वह कपटी है
जो छुपकर हम पर वार करे।

कायर का जीना क्या जीना
सौ बार मरा करते हैं,
जीना हो तो शूरवीर सा
जो मरकर अमर होते हैं।

आओ माँ का कर्ज चुका दें
जिसने हमको जन्म दिया,
ना भूलें कर्त्तव्य निभाना
वीरों ने यह सन्देश दिया।

तृप्त शत्रु के रक्त से होगा
मन में दबा इतना आक्रोश,
हर-हर, हर-हर महादेव का
हो जाने दो फिर जय घोष।



अब जागेंगे शंकर

लो देखो एक वार पुनः
शत्रु आँखें दिखलाने लगा,
जहर उगलता विषधर हूँ मैं
फिर हमको जतलाने लगा।

देखो कण-कण करगिल का
लहू से फिर नहलाने लगा,
उसने डसा विश्वास हमारा
फिर से विष बरसाने लगा।

एक ओर है ढोंग मैत्री का
दूसरी ओर नफरत की चाल,
कभी भेड़िया जात ना बदले
भले ओढ़ ले शेर की खाल।

लगता अब जागेंगे शंकर
शेषनाग भी जागेंगे,
जितने विषधर फुफकार रहे
सब नत-मस्तक हो भागेंगे।



शंख-नाद

आज हिमालय से गूँजेगा
फिर नारा जय-घोष का
पराकाष्ठा पर पहुँच गया
दबा हुआ जो रोष था।

आज जगेंगे भोले शंकर
होगा तांडव फिर प्रलयंकर
सामने चक्र सुदर्शनधारी
काँपेंगे सब अत्याचारी।

अंतर्घट तक गरल भरा है
साँसों में विषधर बसते
भोला जीवन डर डर कर मरता
चारों ओर जब तक्षक रहते।

शीश उठाएँ शेष नाग अब
फिर सिन्धु में उठेगा ज्वार
देव करेंगे शंखनाद फिर
और दानव की होगी हार।



सीमा पार से गोली चली

सीमा पार से गोली चली
शत्रु ने फिर ललकारा है,
फिर तोड़ा विश्वास हमारा
वह तो कपटी हत्यारा है।

तेरी तरफ़ नापाक नज़र फिर
दुश्मन का दुस्साहस है,
काट शीश चरणों में रख दें
इतना हम में साहस है।

हाथों में हथियार थमा दे
रुकने का कहाँ वक्त है,
फिर शत्रु ने दी है चुनौती
उबल रहा अब रक्त है।

तिलक लगा दे आज रक्त से
कर दे विदा रण-भूमि को,
दे आशीष हमें हे माता
लौटें वापस विजयी हो।



युद्ध छिड़ा घमासान

द्रास, बटालिक, करगिल में
युद्ध छिड़ा घमासान,
मातृभूमि की रक्षा करने
चल पड़े वीर जवान।

चल पड़े वीर जवान
प्राणों की किसको चिन्ता,
सिर पर बांध कफन
वीर जवान वतन पर मिटता।

अविजित रहे हिमालय मेरा
मुक्त हो अब कश्मीर भी मेरा,
रचें नया इतिहास विजय का
दिल में यह अरमान भरा।

चप्पा-चप्पा मातृभूमि का
अपने प्राणों से है प्यारा,
बच्चा-बच्चा कहे गर्व से
भारत जग में है न्यारा।



है बहुत अभिमान हमें

है बहुत अभिमान हमें तुम पर
हो अपनी धरा के लाल तुम्हीं,
देख-देख तुझे काँपे शत्रु
बने प्रलय के तीव्र प्रवाह तुम्हीं।

जब जब तुम ललकार उठे
रिपु नमन करे तुझको झुक के,
नहीं सामने तेरे टिक सकते
आँधी में उड़े तृण-तृण तिनके।

अरि-मर्दन अब शीघ्र हो वीरों
रह-रहकर मन में भाव जगे,
लौटोगे घर विजयी होकर
यह अटल-अडिग विश्वास जगे।

गर काम आ गये सीमा पर
तो नाम अमर तेरा होगा,
धन्य हुआ तेरा जीवन
इससे बड़ा सुख क्या होगा?



वन्दे मातरम्

हे माँ यदि तुम ना होती,
ना होते धरा पर हम।
वन्दे मातरम्!
वन्दे मातरम्!

उन्नत शीश हिमालय तेरा,
सागर चूमे कदम।
वन्दे मातरम्!
वन्दे मातरम्!

एक भुजा गुजरात है तेरी,
और दूजी है असम।
वन्दे मातरम्!
वन्दे मातरम्!

कश्मीर से लेकर केरल तक,
दृढ़ चट्टान हैं हम।
वन्दे मातरम्!
वन्दे मातरम्!

देख सके जो आँख उठाके,
किसमें इतना दम।
वन्दे मातरम्!
वन्दे मातरम्!

जिस-जिस के नापाक इरादे,
शीश काट दें हम।
वन्दे मातरम्!
वन्दे मातरम्!

नहीं झुकेंगे, नहीं रुकेंगे,
आगे बढ़ते कदम।
वन्दे मातरम्!
वन्दे मातरम्!

तेरे आँचल की छाँव मिले,
सदा मिले यहीं जनम।
वन्दे मातरम्!
वन्दे मातरम्!



जल रहा सिन्दूर है

वह देखो, चला है सूरज
अस्ताचल को डूबने
लालिमा धरती पर छायी
इस चिता को चूमने!

धू-धू कर जलती चिता
शौर्य की लपटें उठीं
जल रहा सिन्दूर है
माथे की बिन्दिया रुठी!

गोद सूनी हो रही
लोरी आहें भर रही
जल गये राखी के धागे
माँऐं, बहनें रो रहीं!

उठ गया माथे का साया
बचपन बिलखता ही रहा
भोला-सा मासूम बालक
अग्नि चिता को दे रहा!

कंधा उसको दे रहा
गोद में पाला जिसे
गर्व से पर शीश उन्नत
ऐसी मृत्यु मिलती किसे?

इस चिता पर लगेंगे
मेले हजारों साल तक
चाँद सूरज देंगे गवाही
ना भूलेगा इतिहास तक!



ना याचक बन जीना

नहीं दीन-हीन बनना तुमको
ना याचक बन जीना तुमको,
पुरुषार्थ-पराक्रम ऐसा हो
सब तेरे आगे नतमस्तक हों।

क्या मिलेगा अश्रु बहाने से
अब स्वयं तुम्हीं अंगार बनो,
सीमा पर शत्रु बैठा है
डटकर उस पर वार करो।

अब शस्त्र तुम्हारे हाथ में हो
हर साँस में साहस साथ में हो,
ना औरों से कुछ आस करो
खुद अपने पर विश्वास करो।

ना कातर दृष्टि से देखें
अपनी शक्ति को हम परखें,
बढ़ रहे कदम ना कहीं रुकें
तेरे आगे अब सभी झुकें।

है यह शाश्वत सत्य सदा
शक्ति को पूजें सभी सदा,
अब धारण हों गांडीव, गदा
हो शौर्य साथ में सदा-सदा।



बेटा गया सीमा पर लड़ने

बेटा गया सीमा पर लड़ने
हो गया एक महीना
पूछ रहा है बूढ़े बापू की
आँखों में पलता सपना—

मेरा बेटा करगिल से
वापस आयेगा ना!

ना कोई है चिट्ठी पाती
कहीं कोई खबर ना
बूढ़ी आँखों से है बहता
झर-झर प्यार का झरना—

मेरा बेटा करगिल से
वापस आयेगा ना!

इसी गोद में उसे खिलाया
अँगुली पकड़कर उसे चलाया
आज वतन ने उसे पुकारा
जीत कर फिर आ जाना—

मेरा बेटा करगिल से
वापस आयेगा ना!

अन्न-त्याग बैठी है बहू भी
आस की डोर टूटे ना

भूल गयी है भूख-प्यास सब
भूली सजना, संवरना—

मेरा बेटा करगिल से
वापस आयेगा ना!

मेरा तो यही एक लाड़ला
मुझ बूढ़े का सहारा
लेकिन माँ की लाज बचाने
अपनी जान लुटाना—

मेरा बेटा करगिल से
वापस आयेगा ना!

चाहता हूँ अब पंख लगाकर
सीमा-पार मैं भी उड़ जाऊँ
जानता हूँ लाचार बहुत हूँ
फिर भी पांव रुके ना—

मेरा बेटा करगिल से
वापस आयेगा ना!

काट शत्रु का शीश, लाल
मेरे सीने से लग जाना
चाहे प्राण चले जायें, पर
पीठ नहीं दिखलाना—

मेरा बेटा करगिल से
वापस आयेगा ना!





सौजन्य : हिन्दुस्तान टाइम्स

ना गीली करना आँखें

ना कोई क्रन्दन विलाप हो
ना गीली करना आँखें
मातृभूमि की रक्षा करते
अर्पित की अपनी साँसें!

अंगारों पर चलने वाले
हम शोलों से खेल चुके
कहाँ शत्रु में साहस इतना
हम वीरों को रोक सके!

अपने वतन पर हों शहीद
यह हर घर को सौभाग्य मिले
जान बचाकर भागे दुश्मन
हमें विजय के हार मिलें!

काम आ गया देश की खातिर
धन्य हो गया जन्म मेरा
बार-बार मिले जन्म यहीं
हो ईश्वर उपकार तेरा!

कभी-कभी आता है यारों
जान लुटाने का मौसम
हम ने कर दी जान न्यौछावर
ना करना कोई मातम!



हे वीर-प्रसूता धन्य हो तुम

हे वीर-प्रसूता जननी तुझे
हम कोटि-कोटि नमन करें
जो जन्मे तेरी कोख से माँ
उन वीरों को हम नमन करें!

आज शान्त हो सो रहा
तेरी आँखों का तारा
गोद भले हो खाली तेरी
पर गर्व से उन्नत शीश तेरा!

मातृभूमि पर आँच ना आये
अपनी जान लुटा आये,
वह मिसाल कायम कर दी
घर-घर अलख जगा आये!

हे वीर-प्रसूता धन्य हो तुम
धन्य तुम्हारी कोख हुई
धन्य तुम्हारी सन्तान वीर
जो वीरगति को प्राप्त हुई!



ना भूलें क़ुर्बानी

चला गया वह
छोड़ गया वह
पीछे वीर कहानी
प्राण गँवाए
देश की ख़ातिर
ना भूलें क़ुर्बानी!

धन्य हो गयी
माँ वसुन्धरा
वीर था वो तूफानी
ख़ून बहाया
देश की खातिर
जैसे बह गया पानी!

सुनेंगे उसकी
शौर्य गाथाएं
बच्चे बच्चे की ज़बानी
गाँव-गाँव
चौपालों में
चर्चित यही कहानी!

चुन-चुन कर
शत्रु को मारा
फिर अपनी जान लुटा दी
युगों युगों तक
याद रहेगी
दी उसने जो क़ुर्बानी!

काम आये जो
देश की ख़ातिर
धन्य है वही जवानी
बढ़े कदम कभी
रुक नहीं पाये
हैं धन्य वीर अभिमानी!



अब फूल-फूल अंगार बने

मैं शहीद की विधवा हूँ
मैं गर्व से शीश उठाऊँगी,
उनकी यादों के मोती मैं
आँचल में सहज सजाऊँगी।

उनकी यादों के साये में
मैं सारी उम्र गुजारूँगी,
उनकी चरणों की धूलि को
अपने माथे पर लगाऊँगी।

अब और न अश्रु धार बहे
सीने में साहस पाल रहे,
अब फूल-फूल अंगार बने
यह चिता अमर इतिहास बने।

आने वाला अब हर एक पल
उनकी गाथा गुनगुनाएगा,
वह मातृभूमि पर शहीद हुए
इतिहास यही दोहरायेगा।





सौजन्य : हिन्दुस्तान टाइम्स

फिर मिलें अगले जनम

करगिल की वादियों में
गोलियों को झेलते
ना रुके बढ़ते कदम
शोलों से तुम खेलते!

हँसते-हँसते प्राणों की
बाजी लगाने तुम चले
देख कर साहस तुम्हारा
शत्रु भी थर्रा उठे!

हे धरा-सुत धन्य हो
धन्य माँ की कोख है
धन्य है मेरा भी जीवन
मृत्यु का नहीं शोक है!

टूटे ना जन्मों का बन्धन
प्राण-प्रिय यह बात हो
हो गये तुम तो अमर
हर साँस में तुम साथ हो!

आँसुओं को थाम कर
अंतिम विदा मैं ले रही
फिर मिलें अगले जनम
वादा मैं तुमसे ले रही!



[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

फिर चले तोपों से गोले
फिर धमाके गूँजते
रंग गई पर्वत-शिखाऐं
अब शहीदी खून से!

जल रही चिता शहीद की
मेरे छोटे-से गाँव में
कितने अरमां जल गये
इस चिता की ज्वाल में!



कैसे अर्थी स्वीकार करूँ

डोली में विठाकर लाए थे
कैसे अर्थी स्वीकार करूँ
मैं समझ न पाऊँ हे स्वामी
कैसे मैं स्वागत द्वार बनूँ!

है सत्य तुम्हें भेजा मैंने
सीमा पर शत्रु से लड़ने
है सत्य यह भी कहा मैंने
चिन्ता नहीं प्राण पड़ें देने!

तेरी ललाट पर हे स्वामी
था अपने रक्त से तिलक किया
रण-भूमि में पीठ ना दिखलाना
हाँ यह भी मैंने वचन लिया!

तुम मरे नहीं, तुम अमर हुए
सीने पर झेली है गोली
ना भूल सकूँगी मैं तुमको
कैसे भूलूँगी वह डोली!

पर आज पुनः प्रण करती हूँ
क्षत्राणी धर्म निभाऊँगी
आने वाली सन्तान को भी
मैं तुझ-सा वीर बनाऊँगी!

जैसे ही धरा पर आयेगा
उसे तेरी कथा सुनाऊँगी
बन्दूक थमाकर हाथों में
शत्रु का शीश मंगवाऊँगी!



मैं सीमा पर जाऊँगा

ऐ माता बन्दूक दिला दे
मैं सीमा पर जाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

साक्षी है यह चिता पिता की
अपनी कसम निभाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

जिसने तुझे अश्रु दिये माता
उनको ज़िन्दा दफ़नाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

जो सपने पापा ने देखे
उन्हें पूर्ण कर आऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

बूढ़े दादा के आँखों की
ज्योति मैं बन जाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

आँच ना आँचल पर आये
मैं दूध की लाज निभाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

बहुत्त करी घुसपैठ शत्रु ने
उसे खदेड़कर आऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा

शत्रु फिर ना उठ पायेगा
मैं इतना रक्त बहाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

भस्म करूँगा शत्रु को
मैं खुद शोला बन जाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

चाहे जैसा हो विकट युद्ध
मैं विजयी होकर आऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

करगिल की चोटी पर फिर से
अपना तिरंगा लहराऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!

ऐ माता बन्दूक दिला दे
मैं सीमा पर जाऊँगा
अपने पिता के हत्यारों का
मैं शीश बींध कर आऊँगा!



बस थोड़े बरस की बात

नन्हा बेटा ना समझ सका
उसके आँगन क्यों मेला लगा,
वह नहीं जानता मतलब इसका
वीरगति को पिता चला।

वह यही सोचता सोये हैं
बापू मेरे, निद्रा में गहरी,
गर नहीं जागा इस निद्रा से
तो मैं बनूँगा इसका प्रहरी।

बन्दूक उठाकर बापू की
मैं भी सीमा पर जाऊँगा,
जब तक शत्रु ना खतम करूँ
मैं वापस घर नहीं आऊँगा।

खेतों पर जाओ तुम दादा
तुम अपना कर्म किये जाओ,
जो काम अधूरा बापू का
है फर्ज़ तुम्हारा कर आओ।

बस थोड़े बरस की बात है जब
बापू सा बड़ा हो जाऊँगा,
सीमा से जीत के लौटूँगा
तेरे कंधे से कंधा मिलाऊँगा।



ऐ शहीद तुझे सलाम

झेल ली सीने पर गोली,
शीश ना झुकने दिया।
मातृभूमि की आन को,
तुमने नहीं मिटने दिया॥

दस-दस पर ओ वीर अकेले,
पड़ते रहे थे तुम भारी।
लड़ते-लड़ते जान लुटा दी,
लेकिन हार नहीं मानी॥

ऐ शहीद तुझे सलाम,
कोटि-कोटि जन करें प्रणाम।
जब-जब नव इतिहास रचेगा,
होगा स्वर्ण-जड़ित तेरा नाम॥

हो सपूत तुम मातृभूमि के,
कोटि-कोटि वन्दन करते हैं।
ना जायेगी व्यर्थ शहादत,
तुमसे वादा करते हैं॥



शत्-शत् प्रणाम

कोई कह रहा तुझे अलविदा
कोई कर रहा तुझे सलाम,
मातृभूमि के वीर लाड़ले
तेरे चरणों में शत्-शत् प्रणाम।

तेरी जुदाई बहुत कठिन है
बहुत कठिन है सूनी शाम,
कोई अल्लाह को दे अज़ान
कोई बोले सत्य है राम नाम।

सीमा पार शत्रु को खदेड़ा
आ गये तुम तो देश के काम,
शीश हमारा कभी झुके ना
जाते-जाते दे गये पैगाम।

फौलादी थे तेरे इरादे
डटे रहे जैसे चट्टान,
दुश्मन पीठ दिखाकर भागा
संकल्प तुम्हारा बहुत महान्।

कोई कह रहा तुझे अलविदा
कोई कर रहा तुझे सलाम,
मातृभूमि के वीर लाड़ले
तेरे चरणों में शत्-शत् प्रणाम।



यदि साहस है

लाँघ शत्रुता की सीमा
दानवता नंगा नाच करे,
कायरता की चरम है सीमा
बन वहशी व्यभिचार करे।

यदि साहस है—सामने आओ
आकर आँख-से-आँख मिलाओ,
छुप-छुपकर क्यों वार हो करते
दस्यु-सा व्यवहार हो करते।

जिसने हमारे वीरों के शव
क्षत-विक्षत कर अपमान किया,
उन हाथों को काटकर रखें
तभी प्रतिशोध हमारा पूर्ण हुआ।

चीर के छाती कायर शत्रु की
दिल तेरी चिता में जला देंगे,
उसके टुकड़े-टुकड़े करके
गिद्धों की भेंट चढ़ा देंगे।



ऐसा करो प्रहार

सीमा पार से मिल रही,
फिर से नई ललकार।
फिर से सिर ना उठ सके,
ऐसा करो प्रहार॥

घुसपैठ करने लगे,
साथ में हैं हथियार।
क़ब्र खुदे इनकी यहीं,
ऐसा करना वार॥

भाषा युद्ध की जानते,
नहीं समझते प्यार।
करो आक्रमण जोर से,
शत्रु करे चीत्कार॥

आदत ऐसी बिगड़ गयी,
पाकिस्तान लाचार।
मियां शरीफ फिर खोल रहे,
अपने विनाश के द्वार॥



बुझे बुझाये ना बुझे

'शरीफ़' शराफत छोड़ कर,
बना विषैला नाग।
बुझे बुझाये ना बुझे,
खुद के घर की आग॥

खुद के घर की आग,
पड़ोसी चैन से बैठा।
उड़ी रात की नींद,
देखो फिर झगड़ाकर बैठा॥

झगड़े की चिन्ता नहीं,
ना ही करना विवाद।
पहले कुचलें फन नाग का,
करें बाद में बात॥

करें बाद में वात,
भूत जो लातों से माने।
आदत से लाचार,
कभी बातों से माने?



लगता है फिर भूल गया

हाथ बढ़ाया मैत्री का
ना समझो कमजोर,
हाथों में हैं हथियार भी
और प्रलय का जोर।

देखो सोये शेर को
ना कर चूहे तंग,
जगा, दहाड़ा शेर तो
बिल में होगा बंद।

बिल में होगा बंद
भूल ना ऐसी करना
अपने हाथों से क़ब्र
अपनी तुम खोदते रहना।

दुम कुत्ते की टेढ़ी रही
और इरादे नापाक,
लगता है फिर भूल गया
पिछली हारें पाक।



जो बातों से ना समझे

सन् अड़तालीस में जो भूल हुई
अब जड़ से उसे मिटाना है
जो बातों से ना समझे—
उन्हें लातों से समझाना है।

जो बातों से ना समझे...

जागा हिन्द का हर एक बालक
आया नया ज़माना है
पैंसठ और इकहत्तर का
इतिहास पुनः दोहराना है।

जो बातों से ना समझे...

भूख, ग़रीबी और बदहाली
पाक की जनता बनी सवाली
झोंक दो जंग में उस जनता को
क़िस्सा वही पुराना है।

जो बातों से ना समझे...

जो कश्मीर हथियाया उसने
उसे मुक्त कराना है।
उसने हिन्द की ताकत को
अभी नहीं पहचाना है।

जो बातों से ना समझे...

पचास वर्षों की गलती का
खामियाज़ा अब भुगताना है
जाकर सीमा पार उन्हें
इस बार पुनः समझाना है।

जो बातों से ना समझे...



यह हिन्द की फ़ौज़ है

दुस्साहस का प्रतिफल तुम्हें एक नहीं कई वार मिला
सारी दुनिया यही कह रही ना हिन्द को आँखें दिखा।

थक गये हो सिर पटक कर वाल ना वांका कर सके
यह हिन्द की फौज़ है जव चल पड़ी-फिर कहाँ रुके।

शान्ति की वात करते एक भुलावा लग रहा
तेरी हर एक वात अव हमको छलावा लग रहा।

हमने चाही दोस्ती हाथ भी आगे किया
गले मिलने के वहाने तुमने वार खंजर का किया।

भर रहे थे दंभ जो लड़ने का हज़ार साल तक
मिट गया नामो निशां ना मिली है ख़ाक़ तक।

लहरा रहा नीले गगन में फिर तिरंगा शान से
शीश हिमालय का तना एक वार पुनः अभिमान से।



अब तो सबक सिखाना होगा

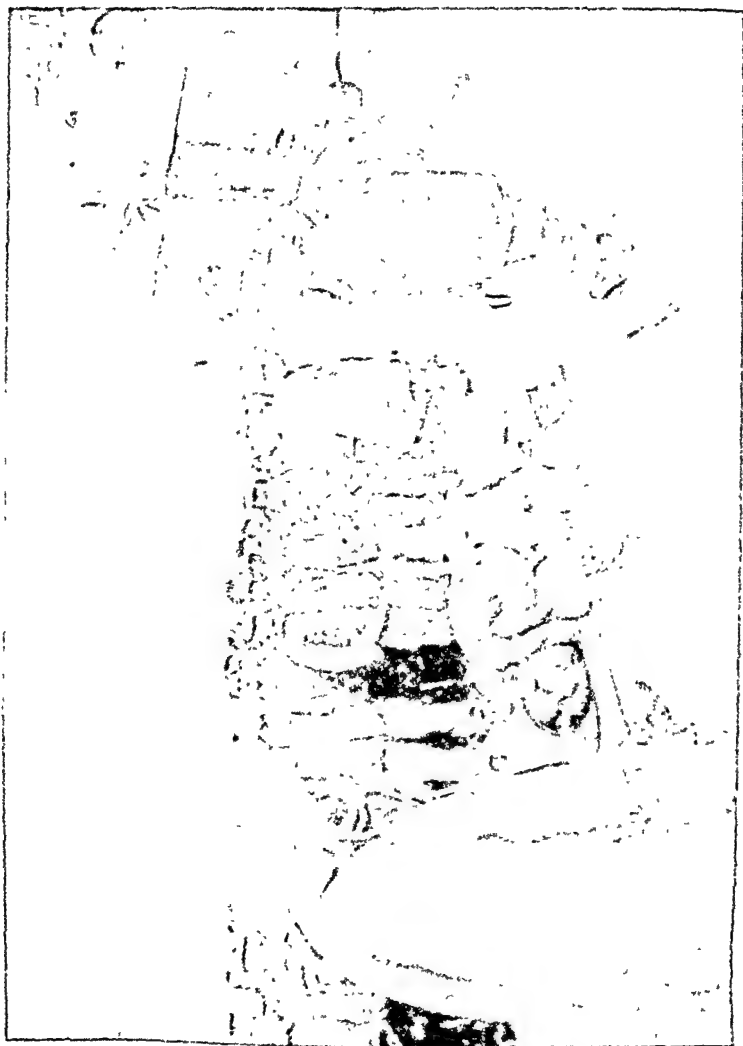
बहुत अमन का पाठ पढ़ लिया
बहुत खा चुके हैं धोखा
अब तो सबक सिखाना होगा
दे ना सके फिर से धोखा!

फिर से उभरे मान चित्र पर
ऐसे भारत का नक्शा
विभाजन की भूल भूलें सब
ऐसा बने नया नक्शा!

दिल्ली से पेशावर तक की
सड़क एकदम सीधी हो
कहीं पाक का नाम रहे ना
एक राजधानी दिल्ली हो!

अब लाहौर, कराची हो या
चाहे रावल पिण्डी हो
लहरादें सब जगह तिरंगा
सभी जगह अब हिन्दी हो!





सौजन्य : हिन्दुस्तान टाइम्स

है मातृभूमि की सौगन्ध तुम्हें

जो गलती तुमसे कई बार हुई
उसको ना दोहराने देंगे
जो खून बहाया सरहद पर
उसे व्यर्थ नहीं जाने देंगे!

है मातृभूमि की सौगन्ध तुम्हें
इस बार ना रोके कोई हमें
जाने दो अब उस पार हमें
झूठे वादों में ना बांधों हमें!

हाँ देश पर प्राण न्यौछावर हैं
पर जीती हुई जंग ना हारेंगे
इन प्राणों का क्या मोल नहीं?
इसका उत्तर तुम दे दो हमें!

फ़तह किया लाहौर को हमने
तुम उसे सौगात में दे आये
हाजीपीर उसने हारा
तुम उसको भी भेंट चढ़ा आये!

हम कैसे भूलें इकहत्तर को
नब्बे हजार युद्ध बन्दी थे
हमने उनका सम्मान किया
जैसे वो हमारे बन्धु थे!

पर आज हमारे वीरों के
शव क्षत-विक्षत वो करते हैं
कैसे हम अब खामोश रहें
ये ज़ख्म सीने में दुःखते हैं!

इन भूलों का प्रायश्चित
इस बार हमें करने देना
जो गलती तुमने कश्मीर में की
फिर से ना दोहराते रहना!

झेलम-चिनाब का पानी अब
गंगा में लाकर दम लेंगे
पाकिस्तान का नामो-निशां
अब दुनिया से ही मिटा देंगे!

अब नहीं बनना हमें शान्ति-दूत
पूजा चंडी की करनी है
इस बार भी जंग उसने छेड़ी
अब सज़ा उसे भुगतनी है!

सौ करोड़ है शीश साथ में
सीने में आक्रोश दबा
मिटा दो दुश्मन को धरती से
खत्म हो झगड़ा सदा-सदा!



ना भूलेगा इतिहास कभी

करगिल से कन्या कुमारी
हम सब की है जिम्मेदारी
बन शोले, अब भड़क उठी है
थी दबी हुई जो चिन्गारी!

हमलावर के पस्त हौसले
हाहाकार मचे भारी
आत्म-समर्पण फिर कर जायें
अब हो ऐसी तैयारी!

लहू लुहान हुई फिर घाटी
देती चुनौती खुद्दारी
देख के दृढ़ संकल्प तुम्हारा
शत्रु सेना फ़िर हारी!

भारत माँ आज़ाद रहे
तुमने जब मन में ठानी
ना भूलेगा इतिहास कभी
तेरे प्राणों की कुर्बानी!



तुम अस्त नहीं होओगे

हे सूर्य तुझे है शपथ आज
तुम अस्त नहीं होओगे,
जब तक बैरी का अन्त ना हो
तुम रात नहीं सोओगे—

तुम अस्त नहीं होओगे,
तुम रात नहीं सोओगे।

है स्वेद-कणों से भरी भाल
भरी तन में कोटि-कोटि ज्वाल,
ना थकित-व्यथित, ना हो चिन्तित
तुम आस नहीं छोड़ोगे—

तुम अस्त नहीं होओगे,
तुम रात नहीं सोओगे।

उद्धीप्त-तीव्र किरणें तेरी
कभी थके नहीं इन राहों में,
हे लक्ष्य साधना अब हमको
तुम साथ नहीं छोड़ोगे—

तुम अस्त नहीं होओगे,
तुम रात नहीं सोओगे।

तुम विचरो नभ में हे विशाल
हो पैरों में शत्रु की कपाल
हो जाये रक्त से गगन लाल
तुम राह नहीं बदलोगे—

तुम अस्त नहीं होओगे,
तुम रात नहीं सोओगे।

अपना जीवन और तन-मन-धन
हो मातृभूमि पर अब अर्पण,
सर्वस्व न्यौछावर कर आयें
विश्वास नहीं तोड़ोगे—

तुम अस्त नहीं होओगे,
तुम रात नहीं सोओगे।



देना होगा वचन आज

हम जंग में जीत के आते हैं
तुम 'टेवल' पर हार के आते हो
हम जीत का जश्न मनाते हैं
तुम शीश झुका कर आते हो!

पानी नहीं था खून हमारा
जो सीमा पर वरसा आये
वेशकीमती जानें अपनी
देश के नाम लुटा आये!

देना होगा वचन आज
पिछली भूलें न दोहराओगे
जीते हुए इलाके वापस
भेंट नहीं कर आओगे!

सन् अड़लीस में जंग हुई
हम जीती वाजी हार गये
यू. एन. ओ. की गलती पर
हम आज तक पछताते रहे!

सन् पैंसठ में लाहौर फतह था
तुम वापस देकर घर आये
लाल बहादुर गँवा दिया
तुम रुस में जाकर क्या लाये?

शिमला समझौते ने खत्म करी
वीरों के प्राणों की कुर्बानी
सारे बन्दी पल में सौंपे
क्यों व्यर्थ करी वो कुर्बानी?

हम बस लेकर लाहौर गये
उसका क्या परिणाम मिला
हम हाथ बढ़ाते मैत्री का
उसने पीठ में वार किया!

हम तो अमन के पैग़म्बर हैं
वह आतंक की बात करे
जो जंग की भाषा ही समझे
अब खुलकर उन पर वार करें!

ना बांधो अब और हमें
लक्ष्मण-रेखा में राम
जाकर सीमा पार हमें
करने दो काम तमाम!





सौजन्य : हिन्दुस्तान टाइम्स

जो बढ़े कदम वो रुके नहीं

जो जंग थोपता है हम पर
उसको जग से फटकार मिली,
अब शीघ्र शत्रु को हार मिली
और तुम्हें जीत उपहार मिली!

है लक्ष्य यही संहार करो
शत्रु पर प्रबल प्रहार करो,
जब कोटि-कोटि जन साथ तेरे
पीछे की चिन्ता नहीं करो!

बोफोर्स से ऐसे गोले चलें
जिन्हें देख शत्रु का दिल दहले,
अब ऐसे तेज धमाके हों
शत्रु भागे सबसे पहले!

जब मिग विमान नभ में गरजे
शत्रु निकले ना बंकर से,
दन-दन दन-दन दन बम बरसे
शत्रु प्राणों को तब तरसे!

बन्दूक तुम्हारी थके नहीं
जो बढ़े कदम वो रुके नहीं,
प्राणों की आहुति दे देना
पर शीश तुम्हारा झुके नहीं!



अब युद्ध ठना अंधियारे से

हे ज्योति पुंज चमको नभ में
हो तेज प्रखर तेरे तन में,
बैरी विलीन हो अब तम में
भर दो नव-चेतन जन-जन में!

है तिमिर बना अब आस-पास
बैरी नित करता है प्रयास
कहीं पनप रहा हो अमन-चैन
आता नहीं उसको तनिक रास!

किरणें तेरी शोले उगलें
और तमस बना हर क्षण बिखरे,
अब भोर नयी फिर से निकले
हर दिशा-दिशा में तुम निखरे!

भर देना है तुझे अपना तेज
इस देश के वीर जवानों में,
जब लिये हथेली प्राण चलें
भर लो वीरों को बाहों में!

हम चमकें वीर शिवा बन के
हो तेज तेरा कटारों में,
हम तो प्रताप के वंशज हैं
नहीं डरे कभी अंधियारों में!

किरणों में तेरी ज्योति प्रखर
जलना तुझको अब आठों प्रहर,
अब युद्ध ठना अंधियारे से
हो विजयी तुम हे अजर अमर!



अम्मा कैसे वापस आऊँ

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?
इधर खाई और उधर है खड्डा,
देख देख घबराऊँ।

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

चढ़ बैठा करगिल के ऊपर,
नीचे कैसे आऊँ?
फँस गया खुद अपने जाल में,
हाथ जोड़ पछताऊँ।

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

चारों तरफ है फौज़ हिन्द की,
बरसे आग के गोले।
कोस रहा तकदीर को अपनी,
जा के कहीं छिप जाऊँ।

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

खोल पिटारी, बीन बजाई,
नागों को दूध पिलाया।
नाग बने अब गले का फन्दा,
कैसे जान बचाऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

जब ताका अमरीका को,
तो उसने झिड़काया।
फँस गया हूँ मंझधार में अम्मा,
वापस कैसे आऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

हो निराश इंग्लैंड गया था,
उसने भी धमकाया।
चुल्लू भर पानी भी ना मिला
कहाँ डूबने जाऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

भागा-भागा चीन गया था,
पर वह भी कतराया।
अपने सारे आकाओं पर,
अब कैसे मैं गुर्राऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

बहुत लगा जेहाद का नारा,
साथ ना कोई आया।
नत-मस्तक सब हिन्द के आगे,
सबसे पिटता जाऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

कल तक जो पुचकार रहे थे,
गले में बाँहें डाले।
अब सब मिल फटकार रहे हैं,
कैसे नजर उठाऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

सारे जग ने मुझे छकाया,
खूब करी है खिंचाई।
अब तो नाक कट गई अम्मा,
वापस कैसे चिपकाऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

भारी पड़ गया अटल बिहारी,
जाऊँ इसकी बलिहारी।
पीठ में खंजर मैंने भोंका,
कैसे नजर मिलाऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

अब तो बना गधा धोबी का,
दर-दर भटक रहा हूँ।
घर का रहा न घाट मिला रे,
अब मैं किधर को जाऊँ?

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?

कान पकड़ मुर्गा बनता हूँ,
कुक्कुड़ूँ-कूँ चिल्लाऊँ।
अब तो मुझको माफी दे दो,
कभी हिन्द से ना टकराऊँ॥

अम्मा कैसे वापस आऊँ,
अम्मा कैसे वापस आऊँ?





सौजन्य : हिन्दुस्तान टाइम्स

फिर तिरंगा झूमता

मुक्त हैं पर्वत शिखाएं फिर तिरंगा झूमता,
निखरे इसके रंग तीनों अब गगन फिर चूमता।

वीर बाना पहन लेंगे रंग केसरिया रँग दे कोई,
पर हमारी शान्ति को कायरता ना समझे कोई।

हम अमन के दूत हैं श्वेत रंग बतला रहा,
जीओ और जीने दो जग को सन्देश यह फैला रहा।

हमको भाती है समृद्धि और उन्नति हम करें,
रंग हरा हमको है प्यारा शान से आगे बढ़ें।

तीन रंगों का तिरंगा शौर्य चक्र है मध्य में,
विजय-पथ पर बढ़ते जाना अब रुको न मध्य में।

स्पर्श कर पावन ध्वजा का धन्य किरणें हो गयीं,
शौर्य का जो सूर्य निकला अब नहीं डूबे कभी।



दूध का जो है जला

स्वर्ग सी वसुन्धरा को
शोलों की भेंट कर दिया,
वादी के सुख-चैन को
जंग में तवाह किया।

छीन ली मुस्कान है
वचपन सहम के मौन है,
दुःख-दर्द सवको दे दिया
हत्यारा सवका कौन है?

जो शान्ति के मसीहा थे
वार उन पर तुमने किया,
जो घर पनाह दे रहे
तुमने उन्हें वरवाद किया।

शान्ति की वात भी
अव तुम्हीं करने लगे,
घाव देकर अव तुम्हीं
मरहम लगाने को चले।

तेरे मुँह से अमन की वात
एक छलावा लग रहा,
दूध का जो है जला
वह छाछ को भी फूँकता।



उर में तूफ़ान भरा है

शूरवीर के शरों में बिंधकर
शत्रु चरणों में गिरा है
समर-क्षेत्र के कण-कण में
फिर कुरुक्षेत्र बसा है!

पार्थ तुम्हारे हाथों में
फिर गांडीव धरा है
सुनकर तेरा शंखनाद
कायर डरा-डरा है!

खिंची भौंहों की प्रत्यंचा
नयनों में रोष भरा है
फड़क रही फिर भुजा तुम्हारी
रक्त उबल रहा है!

अन्तर में आक्रोश भरा
रग-रग में रोष भरा है
विजय घोष से गगन गूँजता
उर में तूफ़ान भरा है!



मूल्यों का कोई मोल नहीं

हमने तुम्हारे मृत सैनिकों का
देखो पूर्ण सम्मान किया
मर कर जो मिट्टी में मिला
लो माटी में उसे दफ़ना भी दिया।

तुम देखो अपनी करतूतों को
जो वहशीपन है तुमने किया
अरे मरे हुए वीरों पर भी
तुमने अत्याचार किया।

कर दिये शवों के अंग भंग
यह करके तुमने क्या पाया
इसीलिए तो दुनिया में
तू ही कायर भी कहलाया।

जहाँ मूल्यों का कोई मोल नहीं
नैतिकता आँसू भर रोती
ना शीश उठाकर चल सकता
हार भी जग में उसकी होती।



ये साँप सरहदों के

ये साँप सरहदों के मोहब्बत को डस गये
अपने मतलब की खातिर वो बीज नफरत के बो गये

नफरत की आग ऐसी जली अदाएं झुलस गयीं
जहरीली आँधियों में सदाएं भी जल गयीं

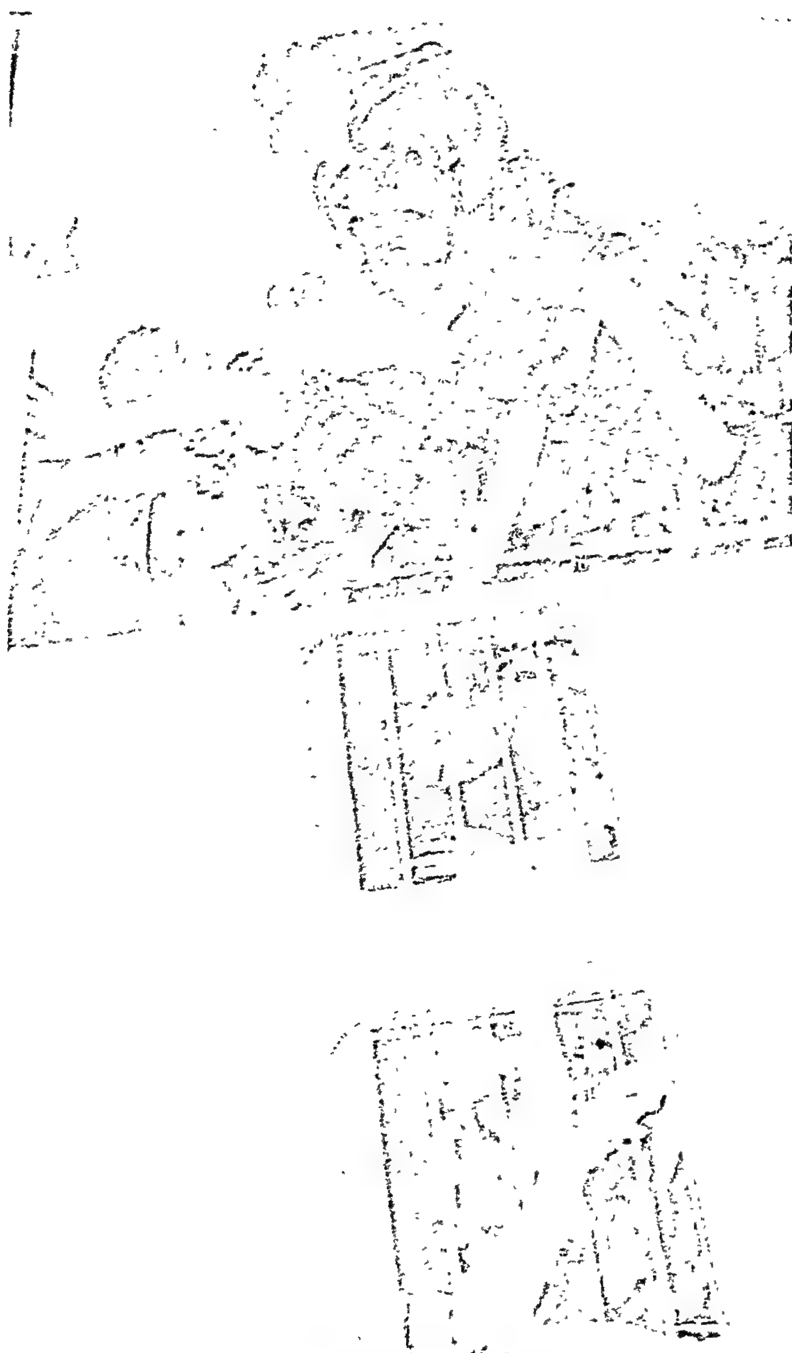
वो खेलते हैं खेल भाई को भाई से लड़ाके
तन रही मिसाइल कहीं एटम के धमाके

है वक्त अभी भी हाथ में सँभल जायें हम यहीं
बढ़कर मिला लो हाथ देर ना हो जाये अब कहीं

तेरी हर अदा पे मेरी आदाब अर्ज़ है
पर कुबूल हो नमस्ते मेरा तेरा भी फ़र्ज़ है

जो प्यार दबा सीने में तेरे मेरे दिल पर कर्ज़ है
ज्यादा नहीं थोड़ी ही सही तेरी भी गर्ज़ है





सौजन्य : हिन्दुस्तान टाइम्स

सत्यमेव जयते

दिया विश्व को
सन्देश प्रेम का,
हैं हम
शान्ति के दूत भी,
स्वाभिमान को
ना ललकारो,
हम बन सकते
यम-दूत भी।

'सत्यमेव जयते'
कहते हैं
और कहते
'वन्दे मातरम्'
लेकिन सारा
विश्व जान ले
कभी नहीं थे
कायर हम।

ना तो राम की
मर्यादा को
समझो उसकी
मजबूरी
ना तो कृष्ण के
प्रेम को मानो
तुम उसकी
कोई लाचारी।

मत भूलो कि
उसी राम ने
नाश किया था
रावण का,
उसी कृष्ण ने
मद चूर किया था
जरासन्ध और
कंस का।

दिया विश्व को
सन्देश प्रेम का,
हैं हम
शान्ति के दूत भी,
स्वाभिमान को
ना ललकारो,
हम बन सकते
यम-दूत भी।

□

लें शपथ अब आज हम

लें शपथ
अब आज हम सब
साक्षी मान भगवान को,
मातृ-भूमि की
रक्षा हेतु
उत्सर्ग करेंगे प्राण को।

वह जीवन भी
क्या है जीवन?
जो खुद जिए
खुद ही मरे, निष्प्राण हो,
भेंट है मस्तक हमारा
अपनी धरा की आन को।

सर्प जो फुफुकारते
डस रहे
राष्ट्र के सम्मान को,
काटना है
उन फनों को
चाहे यह शीश क़ुर्बान हो।

जो आँख उठने लगे
माँ भारती पे
अपमान को
बन त्रिशूल छेदें उन्हें
दें भेंट
अपनी जान को।

लें शपथ
अब आज हम सब
साक्षी मान भगवान को।



कुछ तुम चलो, कुछ हम चलें

बात बन जाये अगर तुम
हाथ मेरा थाम लो,
अब कोई शिकवा ना हो
चाहे उम्र तमाम हो।

मैंने तो मुद्दत से चाही थी
तुझसे अपनी दोस्ती,
देर अब भी ना हुई
आ निभा ले दोस्ती।

जंग कर के क्या मिला
घाव दोनों को लगे,
बदनाम जहां में हम हुए
घर भी हमारे ही जले।

नफ़रतों का दौर अब
और ना आगे चले,
प्यार की बुलंदियाँ
अब दिलों को छू चले।

दूर कर दें आज हम
सरहदों के फासले,
आ जा अब मिल लें गले
कुछ तुम चलो, कुछ हम चलें।



कब होगी बन्द लड़ाई

यहाँ कभी था भवन सुहाना
एक अहाता, एक था अँगना
कभी होली, कभी ईद मनाते
खन-खन खनके खुशी से कंगना।

मगर अचानक आँधी आई
बिछड़ गये भाई से भाई
लुप्त हो गयी मुस्कान लवों से
गहरी हो रही बीच की खाई।

सरहद पर वन्दूक, मिसाइल
आज लड़ रहे भाई से भाई
हो गये हैं क्यों खून के प्यासे
आखिर कव होगी बन्द लड़ाई?

इधर सुहागन विधवा होती
उधर भी हुई हैं गोदें खाली
दोनों तरफ वहनों ने सही हैं
अपने-अपने भाई की जुदाई।

कव सोचा था हमने तुमने
अलग पड़ेगा रहना
देखा था आज़ाद हिन्द का
हम सबने एक सपना।



धोरों की धरती

कुछ बात करें उस धरती की,
जो वीर-प्रसूता जननी है
कण-कण चन्दन बन महके,
ऐसी धोरों की धरती है।

राजपूतों की आन यहीं है
भामाशाह का दान यहीं है
मातृभूमि पर पुत्र हैं अर्पित
ऐसी पन्ना-धाय यहीं है।

नारी यहाँ ममता की मूरत
नारी है वीरों की खान
जौहर की ज्वाला में लिपटी
वीर पद्मिनी यहीं महान्॥

कुछ बात करें...

जहाँ शीश की भेंट चढ़ा दें
हाड़ा रानी यहीं महान्
बींधा शर से शीश गोरी का
यहीं हुआ था वीर चौहान।

वीर पहन केसरिया बाना
तूफानों से जब निकले
देख देख दुश्मन थर्राए
दावानल से वह निकले॥

कुछ बात करें...

अस्सी घाव राणा सांगा के
यवनों में खौफ जगाते थे
पौरुष प्रताप का देख-देख
खुद अकबर भी घबराते थे।

देख-देख चेतक की गति को
हाथी की छाती काँपी,
वन केसर पूजी जाती
हल्दी घाटी की माटी॥

कुछ बात करें...

घी-दूध की नदियाँ बहतीं
भले नहीं पूप पानी
रक्त जहाँ पानी सा बहा दें,
वो वीर यहीं हैं अभिमानी।

दूर-दूर बालू के टीले,
गाँव-गाँव में ऊँट सजीले,
घूँघट में सौंदर्य है पलता
ढोला-मारू छैल-छबीले॥

कुछ बात करें...

शौर्य-प्रेम और नेह बरसता
महल, हवेली और ढ़ाणी
जहाँ मीरा सी प्रेम-दीवानी
भक्ति की गूँजे वाणी।

मातृभूमि की महान् है गाथा,
उस गाथा का श्रवण करें,
ऐसी पावन, धरती माँ मेरी
उस माता को नमन करें।

कुछ बात करें उस धरती की
जो वीर—प्रसूता जननी है
कण-कण चन्दन बन महके
ऐसी धोरों की धरती हैं।



केसरिया रँगवा दे

रंग केसरिया मँगवा दे रे
केसरिया रँगवा दे
मुझको केसरिया मँग़वा दे रे
केसरिया रँगवा दे!

पहनूँ बाना केसरिया मैं
प्राण हथेली पर हों
शीश शत्रु का काट के लाऊँ
ऐसा मुझको वर दो रे
रंग केसरिया मँगवा दे रे
केसरिया रँगवा दे!

बन कर बिजली टूट पड़ूँ मैं
राग प्रलय की गाऊँ
तांडव करुँ शंकर बन ऐसा
शत्रु सेना भागे रे
रंग केसरिया मँगवा दे रे
केसरिया रँगवा दे!

बुला रही करगिल की चोटी
रक्त का तिलक लगा दे
जीत के वापस मैं लौटूँगा
यह आशीष दिला दे रे
रंग केसरिया मँगवा दे रे
केसरिया रँगवा दे!



अभिमन्यु तुम्हें मरना होगा

अभिमन्यु,
तुम्हें मरना होगा
हाँ, फिर मरना होगा
जब-जब लिखी जायेगी
महाभारत की कथा
तुम्हें मरना होगा
बार-बार मरना होगा।

फिर कहीं षड़यन्त्र रचेगा
फिर वही चक्रव्यूह रचेगा
पाकर तुम्हें अकेला
वार करेंगे तुम पर
तुम्हारे ही अपने—
कोई गुरु, कोई तात
करेंगे छल से आघात
तुम्हें मरना होगा
बार-बार मरना होगा।

दम तोड़ेगी नैतिकता,
धू-धू जलेंगे मूल्य
फ़िर जलेगी चाँदनी
जल जायेगा सूर्य
ढलती हुई किरणों के साथ
तुम्हें भी थकना होगा
और थककर
मरना होगा
तुम्हें मरना होगा
बार-बार मरना होगा।

फिर से मिलेंगे कौरव
करने को नया शिकार
फिर खेलेंगे शकुनि मामा
द्यूत-क्रीड़ा में नयी चाल
चारों ओर फिर घेरेंगे
कई दुर्योधन, कई दुःशासन—
तुम देते रहना
नीति की दुहाई
अन्याय की सूली पर
चढ़ेगी सच्चाई
तुम्हें मरना होगा
बार-बार मरना होगा।

फिर होंगे मौन
आचार्य द्रोण
डबडबाई आँखों से
देखेंगे विदुर
तुम ओझल हो जाओगे
दृष्टि से दूर
और झुकाये शीश

होंगे असहाय पितामह भीष्म
चक्रव्यूह से निकलने को व्याकुल
तुम छटपटाओगे, थक जाओगे
छल के तीक्ष्ण शरों से
बिंध जायेगा तुम्हारा शीश
तुम्हें मरना होगा
अभिमन्यु
तुम्हें बार-बार मरना होगा।



हुई भोर उजियारी

ढली रात अँधियारी
अब तो हुई भोर उजियारी
आन बचा ली मातृभूमि की
जायें तेरी बलिहारी।
हुई भोर उजियारी...

माना मंज़िल बहुत कठिन थी
राह विजय की बहुत विकट थी
तेरे दृढ़ निश्चय के आगे
भागे हैं आक्रमणकारी!
हुई भोर उजियारी...

देख के तेरा शौर्य-पराक्रम
शत्रु व्यथित था भारी
तेरे सामने ना टिकने पाये
तुम तलवार दुधारी।
हुई भोर उजियारी...

पीठ दिखाकर भाग रहा है
कायर शत्रु दुराचारी
विजय माल है तेरे कंठ में
जश्न मने अब भारी।
हुई भोर उजियारी...



जागते रहो

यह हमारी जन्म-भूमि
यह हमारी कर्म-भूमि,
यह हमारी समर-भूमि
यह सन्देश दे रही—
जागते रहो,
जागते रहो!

अब हिमालय कह रहा
घाव कबसे सह रहा,
कश्मीर की वादियाँ
यह सन्देश दे रही—
जागते रहो,
जागते रहो!

कितनी माँगें सूनी हुईं
कितनी गोदें खाली हुईं,
यह चिता शहीद की
यह सन्देश दे रही—
जागते रहो,
जागते रहो!

शत्रु अब घबरा रहा
हाथ जोड़ जा रहा,
करगिल की चोटियाँ
यह सन्देश दे रही—
जागते रहो,
जागते रहो!

पूर्ण युद्ध-विराम है—
इसका क्या प्रमाण है,
चिता में दबी चिंगारियाँ
यह सन्देश दे रही—
जागते रहो,
जागते रहो!

और ना विश्वास कर
शत्रु दग़ाबाज़ है,
जागृति अब हर कहीं
यह सन्देश दे रही—
जागते रहो,
जागते रहो!

अब तो रहना सावधान
अब यही है समाधान,

युद्ध की निशानियाँ
यह सन्देश दे रही—
जागते रहो,
जागते रहो!

देखो आँख झपके नहीं
और खून टपके नहीं,
वादी की वीरानियाँ
यह सन्देश दे रही—
जागते रहो,
जागते रहो!



ललकार

मैं यह इतिहास बदल दूँ

मेरा वश चले तो मैं यह इतिहास बदल दूँ।

आजादी की भूलों का
अहसास आज मैं कर लूँ।
विभाजन से पूर्व जो नक्शा
था वो आज मैं रँग दूँ।
मेरा वश चले तो मैं यह इतिहास बदल दूँ।

जिन बहनों ने राखी खोई
उन धागों को बुन दूँ
जिन माँओं ने गोद की खाली
उनको लोरी दे दूँ।
मेरा वश चले तो मैं यह इतिहास बदल दूँ।

सूनी हो गयी माँग थी जिनकी
उनके आँसू पोंछूँ
उठ गया सिर से साया जिनका
उनका हाथ पकड़ लूँ।
मेरा वश चले तो मैं यह इतिहास बदल दूँ।

गूँज रही आतंक की गोली
खेल रहे सब खून की होली
बुझी दीवाली के दीपों में
फिर से ज्योति भर दूँ।
मेरा वश चले तो मैं यह इतिहास बदल दूँ।

उजड़ गयी कश्मीर की घाटी
खाली हो गये डल के शिकारे
घायल हो गया मेरा हिमालय
उसके घाव मैं भर दूँ।
मेरा वश चले तो मैं यह इतिहास बदल दूँ।

भटक गये नेता हैं सारे
अंधकार में डूबे सितारे
ठंडे पड़ते सूरज में
फिर से आग मैं भर दूँ।
मेरा वश चले तो मैं यह इतिहास बदल दूँ।



जन गण मन

कैसे याद करें जन गण मन?
कैसे याद करें?

भूल गये हम शौर्य शिवा का
भूल गये पौरुष प्रताप का
भूल गये झाँसी की रानी
भूले तांत्या की क़ुर्बानी

कैसे याद करें जन गण मन?
कैसे याद करें?

भूखा भारत, शोषित कण कण
बिलख रहा जहाँ भोला बचपन
उघड़े तन, भ्रमित है यौवन
श्राप बना जन-जन का जीवन

कैसे याद करें जन गण मन?
कैसे याद करें?

आजादी का शोक मनाते
कश्मीर में काले झंडे लहराते
भारत-मुर्दाबाद के नारे
जलते रहे तिरंगे प्यारे

कैसे याद करें जन गण मन?
कैसे याद करें?

मूल्य जहाँ हो गये खोखले,
भड़क रहे मजहब के शोले
भोली जनता के हत्यारे
चुनकर जब संसद में आते

कैसे याद करें जन गण मन?
कैसे याद करें?

भ्रष्ट हो गया देश का नेता
देश की अब किसको है चिन्ता
भ्रष्टाचार में मर-मर कर जीते
भ्रष्ट चरित्र, भ्रष्ट आचरण,

कैसे याद करें जन गण मन?
कैसे याद करें?



आत्म-चिन्तन

स्वतन्त्रता की स्वर्ण-जयन्ती पर,
आओ हम चिन्तन करें,
क्या है खोया और क्या पाया
आओ यह मन्थन करें।

क्यों गँवाई जानें इतनी
जलियाँवाला बाग में,
क्यों बहाया खून अपना
लाल लाजपतराय ने?

क्यों चूमा फाँसी का फन्दा
भगत सिंह, सुखदेव ने,
क्यों चली जालिम वो गोली
गांधी का सीना चीरने?

क्यों लगाया नारा हमने
'जयहिन्द' के घोष का,
क्यों है तोड़ा सपना हमने
वीर सुभाष बोस का?

वो थे दीवाने जो बाँधे
सिर पर अपने ही क़फ़न,
कौन की ग़ैरत की ख़ातिर
हो गये शहीदे-वतन।

सन्तरी बन गये सभी
जो थे लुटेरे घात में,
छल-कपट, धोखाधड़ी
इनकी हर एक बात में।

भ्रष्ट फसलें उग रहीं
अब आज हर एक खेत में,
देश-भक्ति दब गयी
कुछ ख़ाक में कुछ रेत में।

स्वतन्त्रता की स्वर्ण-जयन्ती पर
आओ हम चिन्तन करें,
क्या है खोया और क्या पाया,
आओ यह मन्थन करें।



नव-संकल्प

आहत हिम-गिरि देता चुनौती
सिन्धु भी ललकारता,
आओ हम संकल्प लें
फिर नये निर्माण का।

धुँधली हो गयी यादें पुरानी
भूल गये हम वो कुरबानी,
आज़ादी हो गयी सयानी
लेकिन खून हो गया पानी।

सींखचों में कैद क्यों
आधी अधूरी जिन्दगी,
बन्दूकों की नोंक पर
कश्मीर में वीरानगी।

जो चुनौती मिल रही
हमको यूँ सीमा पार से,
काट दो अब शीश उनका
तीर से, तलवार से।

सड़ चुकी है जो व्यवस्था
भ्रष्ट हो चुका जो प्रशासन,
वार उन पर करना ही होगा
जो है रावण या दुःशासन।

बहुत सोए अब तो जागो
समय कहाँ परिहास का,
अन्यथा हम बनेंगे
जग में विषय उपहास का।

आहत हिम-गिरि देता चुनौती
सिन्धु भी ललकारता,
आओ हम संकल्प लें
फिर नये निर्माण का।



वरदान

हे परमेश्वर! मेरे भारत को
फिर से आज यह वर दो—

तन जाने दो फिर से भृकुटि
उन्नत शीश कसी हों मुट्ठी
जमने लगा जो रक्त शिरा में
उसे उष्ण फिर कर दो।

हे परमेश्वर! मेरे भारत को...

सुप्त शौर्य के ज्वालामुखी जो
उनको आज भभकने दो
लुप्त हुआ गरिमा का सूरज
उसको आज दहकने दो।

हे परमेश्वर! मेरे भारत को...

पांचजन्य का शंखनाद
घर-घर में फिर कर दो
कुरुक्षेत्र की गीता को
जन-जन में फिर भर दो।

हे परमेश्वर! मेरे भारत को...

जो हैं रावण, कंस, दुःशासन
उनका शीश कुचल दो,
कुछ राम, कृष्ण कुछ भीम और अर्जुन
खाली झोली में भर दो।

हे परमेश्वर! मेरे भारत को...

हल्दीघाटी की वह गरिमा
फिर से आज प्रकट हो
कुछ प्रताप कुछ वीर शिवा
हर घर में यह वर दो।

हे परमेश्वर! मेरे भारत को...



मेरा देश है बहुत महान्

आओ आज करें यह गान
मेरा देश है बहुत महान्

मेरी मातृ-भूमि की कोख है
भक्तों और वीरों की खान
इसी धरती पर भक्त हुए हैं
ध्रुव प्रहलाद समान।

आओ आज करें यह गान...

जन-जन में जहाँ राम-कृष्ण हैं
कण-कण में बसते भगवान
महावीर, गौतम की वाणी
जनजीवन में जहाँ भरती प्राण।

आओ आज करें यह गान...

दिए विश्व को इस माटी ने
वेद, उपनिषद् और पुराण
रामायण की महिमा न्यारी,
गूँज रहा गीता का ज्ञान।

आओ आज करें यह गान...

यहाँ पद्मिनी जौहर करती
और अहल्या देती प्राण,
खूब लड़ी झाँसी की रानी
हुई शहीद रज़िया सुल्तान।

आओ आज करें यह गान...

गांधी और सुभाष यहीं हैं
तिलक, गोखले, आजाद यहीं हैं,
भगत सिंह, सुखदेव यहीं हैं
किस-किस का अब करें बखान।

आओ आज करें यह गान...

झर-झर झर-झर झरने बहते,
कलकल कलकल सरिता बहती,
अमृत-वर्षण करते हैं घन
खड़ा हिमालय सीना तान।

आओ आज करें यह गान
मेरा देश है बहुत महान्।



गोरी के वंशज

ज़िद्दी जिन्ना की ज़िद के आगे
जब झुका था एक महात्मा
बँटवारे की तब नींव पड़ी
नापाक पाक था जन्मा।

नाम पाक, नापाक इरादे
छल, कपट और झूठे वादे,
जब से जन्म हुआ पाक का
जंग में उलझे वज़ीर और प्यादे।

कभी अय्यूब, तो कभी याह्या था
लूट-पाट कर राज किया था,
लटकाया भुट्टो को फाँसी पर
ज़िया ने हवस का जाम पिया था।

सभी रहे थे खून के प्यासे
नाकामी के झूठे दिलासे,
बरबादी के जश्न मना के
देते रहे जनता को झाँसे।

ये गोरी के वंशज हैं
ये अमन-शान्ति क्या जानें?
ये तो वहशी हमलावर हैं
बस युद्ध की भाषा पहचाने।



उठो, चलो तुम कर्णधार

मातृ-भूमि कर रही पुकार
जागो, उठो तुम कर्णधार,
देश-द्रोहियों पर करने को प्रहार
तुम बनो वज्र की तीक्ष्ण धार।

घनीभूत पीड़ा अपार
तुम बनो दलितों के सूत्रधार,
हो ओजस्वी तुम, निर्विकार
कर दो अपना जीवन निसार।

युवा-शक्ति तुम हो महान्
आरंभ करो नव-अनुष्ठान,
तुम बनो शान्ति के वितान
तुम रचो नया एक संविधान।

मत भटको भोग-विलासों में
भरो तेज-पुंज विश्वासों में
बन उदित सूर्य की प्रखर किरण
भरो नये प्राण निष्प्राणों में।

रण-भेरी तुझको ललकार रही
क्रुद्ध नागिन सी फुफकार रही,
यवनों पर गिरो तुम बन कृपाण
आरम्भ करो तुम महा-प्रयाण।

मातृ भूमि की सुनकर पुकार
उठो, चलो तुम कर्णधार
रख आज हथेली पर अपने प्राण
आरम्भ करो तुम महा-प्रयाण।



रणभेरी बजती कब की

नहीं सुला मुझे हे माता
ना दे अब लोरी, थपकी,
नहीं सुना, संगीत प्यार का
रणभेरी बजती कब की।

गूँज रहे हैं गीत शौर्य के
टूट रहे अब बाँध धैर्य के
बहुत सहा आतंक शत्रु का
अब तो प्रलय करनी होगी।

नहीं सुना, संगीत प्यार का
रणभेरी बजती कब की।

मिल जाने दे मुझ को भी
दीवानों की टोली में
भर जाने दे मेरा जीवन
मातृ-भूमि की झोली में।

नहीं सुना, संगीत प्यार का
रणभेरी बजती कब की।

सुलग उठे फिर अग्नि हृदय में
उबल उठे फिर रक्त शिरा में
बन बिजली हम गिरें शत्रु पर
ऐसा गीत अब सुना हमें।

नहीं सुला मुझे हे माता
ना दे अब लोरी, थपकी
नहीं सुना, संगीत प्यार का
रणभेरी बजती कब की।



पहरेदार बनो, तुम जागो

पहरेदार बनो, तुम जागो
मातृ-भूमि कर रही पुकार
जयचन्दों को जगह नहीं है
दे दो चुनौती और ललकार।

पहरेदार बनो, तुम जागो...

घर के भेदी को धिक्कारें
गद्दारों को चुन-चुन कर मारें
छेदें छाती तीक्ष्ण शरों से
और गाड़ देंगे तलवार।

पहरेदार बनो, तुम जागो...

बुरी नजर ना उठने पाए
अपनी भारत-माता की ओर
सब को शीश नवाना होगा
चाहे आततायी हो प्रबल कठोर

पहरेदार बनो, तुम जागो...

पड़ी म्यान में जो तलवारें
कुंठित होती रही कटार
तेज करो अब धारें उनकी
रण-भूमि में खनके झंकार।

पहरेदार बनो, तुम जागो...

चाहे शत्रु की सेना आए
सवा-लाख से एक लड़ाएँ
शीश हथेली पर वीरों के
देश की खातिर प्राण लुटाएँ

पहरेदार बनो, तुम जागो...

बने कन्दुकी शीश शत्रु के
ठोकर से उन्हें देंगे उछाल
नहीं चाहिए हार पुष्प के
धारण करनी हमें मुण्ड-माल।

पहरेदार बनो, तुम जागो,
मातृभूमि कर रही पुकार।



जाने कहाँ है खो गया

ना जाने कैसे रिक्त हुआ
सिन्धु समग्र जोश का?
जाने कहाँ है खो गया
गगन विशाल होश का?

ना जाने कैसे रिक्त हुआ
सिन्धु समग्र जोश का?

लुट गया वैभव समग्र
गरिमा का जो कोष था,
जम गया शिराओं में
रक्त में जो रोष था।

ना जाने कैसे रिक्त हुआ
सिन्धु समग्र जोश का?

जो वेग था पवन-पवन
ना जाने कैसे क्षीण हुआ,
अणु-अणु अन्तरिक्ष
ना जाने कैसे भस्म हुआ?

ना जाने कैसे रिक्त हुआ
सिन्धु समग्र जोश का?

स्वयं सुधा-वसुन्धरा
कृशकाय हो निरुपाय है,
हे मातृभूमि! लज्जानवत
झुके शीश सब असहाय हैं।

ना जाने कैसे रिक्त हुआ
सिन्धु समग्र जोश का?

सब सन्त शापित से हुए
सब मूढ़, भ्रमित से हुए
रक्षक ही बने भक्षक जहाँ
पूछो न किसका दोष है।

न जाने कैसे रिक्त हुआ
सिन्धु समग्र जोश का?
जाने कहाँ है खो गया
गगन विशाल होश का?



सर्व-धर्म सम-भाव

हमनें सदा विश्वास किया
'सर्व-धर्म सम-भाव' में।
तुम अपने स्वार्थ की खातिर
क्यों लिप्त हुए विनाश में?

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मन्त्र
युगों-युगों से हमने दिया।
अपनी हवस बुझाने को
तुमने अपना ही घर जला दिया।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई
जैन, बौद्ध और पारसी भाई
बरसों से सब साथ रहे
लेकिन तुमको यह बात ना भाई!

हिन्दू-मुस्लिम के नाम को लेकर
तुम बन गये कैसे सौदाई?
धर्म के नाम पर किया विभाजन
और मज़हब की होली जलाई!

कब कहता इस्लाम तुम्हारा
मज़हब के शोले भड़काओ,
कौन सन्त फ़क़ीर यह कहता
भाई-भाई का खून बहाओ!

कौन-सा मज़हब यह कहता है
इतना आज तुम्हीं बताओ
कि इन्सानों की लाशों पर
तुम अपनी दीवार बनाओ!

कब पैगंबर मोहम्मद कहते
मज़हब का तुम ज़हर फैलाओ
कौन सी 'आयत' 'कुरान' की कहती
'गीता' का सन्देश भुलाओ!

जो इस्लाम फला-फूला था
हिन्दुस्तानी माटी पर,
जिन्ना तेरी ज़िद से टकराकर
खड़ा हुआ बरबादी पर।

नफ़रत के वो बीज जो बोए
आज ज़हरीले फल देते हैं
एक इन्सान की भूल से अब
कोटि-कोटि जन रोते हैं।

आज़ादी की जंग की खातिर
हम तो चले मिलाकर कन्धे,
जब मंजिल सामने आई
तुम क्योंकर पथ-भ्रष्ट हुए?

जिन्ना तुमने ज़िद पर अड़कर
भले बना लिया पाकिस्तान

लेकिन खुदा ना माफ़ करेगा।
इस्लामियत का भी किया नुक्सान।

तुम्हीं भटके राह से जिन्ना
हमने तो किया सदा यह गान :

''मज़हब नहीं सिखाता, आपस में बैर रखना
हिन्दी हैं हमवतन हैं, यह गुलसितां हमारा
सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।
सारे जहां से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा।''



घाव अभी तक ताज़ा है

घाव अभी तक ताज़ा हैं
लाशें अब भी चीख रहीं
लहू धरा पर जो बहा था
हिन्द की धरती भीग रही।

खंडित कितनी प्रतिमाएं की
पावन-मंदिर ध्वस्त किए
नर-पिशाच 'गोरी' के आगे
नर-नारी सब त्रस्त हुए।

सभ्य-संस्कृति, सहनशीलता
बनी हमारी कमजोरी
घर में हमारे घात लगाकर
चोर करे सीनाजोरी।

राग शान्ति की हम गाते
अमन-चैन के गीत सुनाते
लेकिन 'गर हमलावर आते
टकरा कर मिट्टी में मिल जाते।

कर परीक्षण 'गोरी' मिसाइल
पाक है इतरा रहा
हैं कितने नापाक इरादे
दुनिया को बदला रहा।

पैंसठ और इकहत्तर की शिकस्त को
झूठ-मूठ झुठला रहा
भूल 'नमाज़' छोड़ 'शराफ़त'
'नवाज़ शरीफ़' बौखला रहा।

लेकिन ना इतिहास को भूलो
इसी धरा पर वीर हुआ था
'पृथ्वीराज चौहान' के तीर ने
उस 'गोरी' को चीर दिया था।

भारत की प्रगति से जलकर
करते रहे तुम व्यर्थ लड़ाई
जब-जब तुमने आँख उठाई
तब तब तुमने मुँह की खाई।

शौर्य, वीर, विश्वास यहाँ है
'नाग', 'पृथ्वी', 'आकाश' यहाँ है
सावन के अंधों अब जागो,
इस 'गोरी' की बिसात कहाँ है?

यदि 'गोरी' 'पृथ्वी' से भिड़ेगा
पस्त हौसला, ख़ाक मिलेगा
पृथ्वी पर ना पाक रहेगा
हिन्द का ऊँचा नाम रहेगा।



खेल के नाम पर ना खेलो

आती हैं चीखें-चीत्कारें
इस आहत कश्मीर से
खेल के नाम पर ना खेलो
तुम देश की तकदीर से।

तनी हुई अब भी बन्दूकें
उड़ती नफरत की आँधियाँ,
छद्म युद्ध में लिप्त रहे और
गढ़ते झूठी कहानियाँ।

घायल वादी की क़ब्रों में
दफ़न हो रही डोलियाँ,
इधर क्रिकेट के मैदानों में
लगती सट्टे की बोलियाँ।

सीमा पर आतंकवाद की
फूट रही चिंगारियाँ,
कैसे खेलें खेल क्रिकेट का
गेंद बनी हैं गोलियाँ।

फिर जागा सोया अभियान

फिर बढ़ा सम्मान राष्ट्र का
फिर जागा सोया अभिमान,
माटी का कण-कण है पुलकित
हुआ राष्ट्र का फिर जय-गान।

उन्नत हो गया मस्तक फिर से
बहुत सहा हमने अपमान,
वीर सपूतों का अभिनन्दन
देश के लिए हो गए क़ुर्बान।

कुरुक्षेत्र जीवन्त हुआ फिर
गूँजा फिर गीता का ज्ञान
बच्चा-बच्चा गर्व से कहता
भारत-भूमि सबसे महान।

शत्रु की छाती फिर काँपी
पूरे विश्व में थर-थर कंम्पन,
नहीं धमकियों से भय खाना
सारा जगत करेगा वन्दन।

मातृ-भूमि की रक्षा हेतु
कर देंगे जीवन बलिदान,
शीश हथेली पर लिए घूमते
रण बांकुरे वीर जवान।



पुलकित है परमाणु

हुआ है हर्षित अणु-अणु
पुलकित है परमाणु भी,
चारों दिखाएं गूँज रही हैं
जय-जयघोष के नारे भी।

उन्नत हो गया हिम-किरीट फिर
उत्तंग-उर्मि सागर में झूमे,
तीनों लोक दे रहे बधाई
यश-गान हुआ घर-घर में ।

चीन, रूस सोते से जागे
फ्रांस, अमरीका आगे भागे,
क्या कर लेंगे जापान, जर्मनी
जैसी करनी वैसी भरनी।

यह तो रीत सदा चली आई
शक्तिवान को सब पूजते भाई,
भारत भी एक 'शक्ति' बन गया
यवनों को यह बात ना भाई।

शत्रु घबराहट को रोके
'गोरी' 'गजनी' माथा ठोके,
सारा जगत स्तब्ध रह गया
शहर शहर हड़कम्प मच गया।

दिग्-दिगन्त में जाग उठा
दबा हुआ जो जोश है,
परमाणु-बम के नहीं धमाके
पांचजन्य का घोष है।

एक दो नहीं तीन धमाके
अरि-दल की अब छाती कॉंपे,
सुन टंकार 'गांडीव' की अब तो
सारा विश्व है थर-थर कॉंपे।



है टीस अब भी उठ रही

आजकल टी.वी., अखबार में
यह चर्चा होता है—
तुम जा रहे हो मिलने गले
क्या फर्क पड़ता है।

दो बूंद नीर को इन्सान
इधर बहाता है—
खेतीहर, मजदूर, गरीब
उधर भी रोता है।

है दूर न हो सकती
लाचार निगाहें—
थकी जीवन के बोझ से
मजबूर सी बाहें।

दो दे सको तो दो हमें
सुकून के कुछ पल
बना डाले नाटक सबक
सहज जाने एक छल।

और नहीं आतंक हो

सौ करोड़ के प्यार की
भेज रहे सौगात
और नहीं आतंक हो
सीधी सच्ची बात।

आए मिलने अटलजी
मियाँ नवाज़ शरीफ़
हम सबकी यह कामना
ख़त्म हो अब तकलीफ़।

दीप जला उम्मीद का
रोशन हुई है शाम
ज्योत प्यार की फिर खिली
देती नये पैग़ाम।

मचल रही सतलज की धारा
मिलने को गंगा-जल से,
प्यार की सरगम गीत सुनाती
निर्मल जल की कल-कल से।



टूटे दीवार सीमाओं की

चले मुदित से अटलजी
रचने नये अध्याय
बरसों से उलझे रहे
ढूँढ़े कोई उपाय।

ढूँढ़े कोई उपाय
समस्या जटिल विकट है
जब तक ना हो विश्वास
समाधान नहीं निकट है।

लो गंगा जल बह चला
स्वागत करता चिनाब
थामो हाथ में हाथ अब
भूलो पिछला हिसाब

भूलो पिछला हिसाब
घाव अब और ना देना
हम तो शान्ति के दूत
तुम भी अब प्यार से रहना।

दिल्ली की दहलीज से
पहुँचे हैं लाहौर
लेकर तोहफ़ा प्यार का
बाँधे प्रीत की डोर।

यात्रा यह लाहौर की
देने लगी सन्देश
टूटे दीवार सीमाओं की
जुड़ जाएँ फिर देश।



सेवा-निवृत्त सैनिक

मुझमें तेज था सूरज का
अब गम का लावा पीता हूँ
चूँकि मौत नहीं आती
इसीलिए अब जीता हूँ।

थी मुझमें गति पवन की
अब तूफानों में घिरता हूँ
कब तक खाऊँ यूँ ही थपेड़े
घुट-घुट कर अब जीता हूँ।

मुझमें सागर की तरंग थी
अब लहरों में बहता हूँ
जब भी उठना चाहता हूँ
फिसल-फिसल कर गिरता हूँ।

मैं तड़ित सा था चंचल
गति बसती पाँवों में हर पल
वज्र-जड़ित सा शून्य पड़ा हूँ
जीता हूँ ना मरता हूँ।

ये 'मेडल' जो शान थे मेरी
अब सीने में चुभते हैं
घाव जंग के हरे हुए फिर
आहत जीवन से डरता हूँ।

मैं शोलों में पलता था
तिरस्कार में जलता हूँ,
शायद कोई हाथ थाम ले
इस उम्मीद में जीता हूँ।

काश चीरती सीना मेरा
रण-भूमि में गोली कोई,
बन शहीद अमर हो जाता
हर पल लेकिन मरता हूँ।

